पूजा की विधि

डॉ. वीरेन्द्र कुमार सक्सेना

रामाश्रम सत्संग
गाजियाबाद

पूजा की विधि

परम संत लालाजी महाराज, फतेहगढ़
परम संत चाचा जी महाराज, कानपुरी
परम संत ताऊ जी महाराज, सिकन्दराबादी
परम संत पूज्य बाबूजी महाराज, गाजियाबादी

के

चरणों में श्रद्धा सहित सादर समर्पित

विनीत : डॉ. वीरेन्द्र कुमार सक्सेना

सर्वाधिकार सुरक्षित

चतुर्थ संस्करण

मूल्य :

प्रकाशक :

डॉ. वीरेन्द्र कुमार सक्सेना (दीन्नू)

बी– 1/26, सेक्टर 'के'

अलीगंज, लखनऊ

परम पूज्य परम संत डा. श्याम लाल सक्सेना
जन्म – 1.1.1901 निर्वाण – 29.12.1987

आओ श्याम, आओ श्याम,
आओ मन के मालिक श्याम ।
तन नगरी के राजा आओ,
जीवों के महाराजा आओ
आओ फन्द छुड़ाओं श्याम । आओ श्याम,
शिला तैराने वाले आओ,
चीर बढ़ाने वाले आओ,
आओ लाज बचाओ श्याम । आओ श्याम ....
ऐ रघुकुल के राघव आओ,
ऐ मधुबन के माधव आओ ।
आओ दास बनाओ श्याम, आओ श्याम ....
ऐ दीनों के दानी आओ,
मस्तों के अभिमानी आओ ।
आओ मस्त बनाओ श्याम । आओ श्याम ....
नयन युगल के तारे आओ,
ऐ प्राणों के प्यारे आओ ।
आओ रूप दिखाओ श्याम आओ श्याम ....

आभार

सत्संगी भाईयों के सतत् मॉग पर और उनके बहुत आग्रह पर पुस्तक "पूजा की विधि" का चतुर्थ संस्करण सभी प्रेमियों तथा सत्संगी भाईयों हेतु पुनः प्रेषित की जा रही है । चतुर्थ संस्करण की पुनः 2000 प्रतियॉ आप सब प्रेमीजनों की सेवा में प्रेषित करते हुये मुझे बहुत संतोष एवं हर्ष हो रहा है।

परमात्मा की असीम कृपा एवं बुजुर्गों के आशीर्वाद से यह पुस्तक सभी प्रेमीजनों एवं सत्संगी भाईयों को उपयोगी लगी चाहें वह संतमत के किसी शाखा से जुड़े हों । यह पुस्तक उनके नित्य के अभ्यास के लिये बहुत उपयोगी साबित हुई और भविष्य में भी होगी ।

इस नवीन संस्करण में कुछ नई सामग्री जैसे बुजुर्गों के समाधि पर या मजार पर जाने का तरीका या अदब और वहॉ पूजा समाप्त करने के पश्चात् की प्रार्थना, दरूद शरीफ का हिन्दी में अर्थ जिसको कई भाईयों ने बख्त भण्डारा पूछा था । इसके अतिरिक्त अभ्यास (पूजा) का निचोड़ दिया जा रहा है ।

इस सेवक ने जो कुछ भी अपने पीरो– मुर्शिद की जबान मुबारक से सुना और उनकी सोहबत में बैठकर प्राप्त किया वह सभी इस नवीन संस्करण में भाईयों के जानकारी हेतु लिख दिया गया है ।

यह पुस्तक नहीं वरन निचोड़ है पूजा के वाह्य रूप का जो आन्तरिक समाधि तक ले जा सकती है पूर्णता को प्राप्त करा सकती है । शर्त केवल प्रेम है ।

श्री जे0 पी0 बाजपेई (लखनऊ) ने रामाश्रम सत्संग, गाजियाबाद द्वारा प्रकाशित सभी पुस्तकों के प्रकाशन में विशेष सहयोग दिया है, जो सराहनीय है । मैं व्यक्तिगत रूप से उनका आभारी हूँ । गुरूदेव उन पर अपनी दया बनायें रखें।

दास

डॉ. वी. के. सक्सेना,
बी– 1/26, सेक्टर 'के'
अलीगंज, लखनऊ ।

ओउम्

दो शब्द

इस पुस्तक को आपके समक्ष प्रस्तुत करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि बहुत से सतसंगी भाईयों का यह भ्रम दूर हो कि अभ्यास कैसे करें और ज़ाहिरी रूप से क्या—क्या किया जाये, यद्यपि परम पूज्य श्रद्धेय बाबूजी, (ब्रहम्लीन परम संत डा0 श्याम लाल सक्सेना जी) ने समय—समय पर सामूहिक रूप से तथा बहुत से प्रेमियों को व्यक्तिगत रूप से यह सब कुछ बताया है।

मनुष्य शरीर प्राप्त करने का एक मात्र उद्देश्य यह कि वह इस जीवन में परम पिता परमात्मा जो सबका सच्चा मालिक है उसको प्राप्त कर ले, और उसमें लय हो जाये । जिस प्रकार पानी दूध में मिलने के बाद उससे अलग नहीं किया जा सकता है, उसी प्रकार किसी साधन, किसी प्रकार से ऐसी अवस्था प्राप्त कर लें, जिससे किसी समय भी ईश्वर से

अलहदगी न हो। यह कहने और लिखने में सरल प्रतीत होता है, वास्तव में बहुत कठिन, बहुत जटिल है। ईश्वर की दया, बुजुर्गों की कृपा और अपने संचित कर्मों के बिना यह असंभव है। ईश्वर दया करे तो बात अलग है। मनुष्य शरीर कई योनियों के पश्चात्, पुण्य व अच्छे कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त होता है। यह व्यर्थ न जाये यही उद्देश्य रहना चाहिये। परम पूज्य बाबूजी बताते थे कि परम पूज्य लालाजी महाराज हमेशा कहते थे और उनका दावा था कि मनुष्य गृहस्थ जीवन में रहकर गृहस्थी के सब फ़र्जयात अदा करते हुये, अपने फ़र्जों को अच्छी तरह अन्जाम देते हुये भी, दुनिया में ज़ाहिरी तौर से रहते हुये भी दुनियाँ से अलग रह सकता है। उसका बातिन किसी समय भी (यादे इलाही) ईश्वर की याद से खाली न हो। ऐसा मुकम्मिल इन्सान ही ईश्वर की नज़दीकी हासिल कर सकता है।

मैं अपने पूज्यवर भाई साहब डा0 राजेन्द्र कुमार सक्सेना की आज्ञा से उन सब बातों का सार जो हम लोगों ने परम पूज्य ताऊ जी (परम संत डा0

श्रीकृष्ण लाल जी साहब, सिकन्दराबादी) एवं श्रद्धेय पूज्य बाबूजी (परम संत डा0 श्यामलाल सक्सेना) साहब के शरण में रहकर तथा बिरासत में मिली उनकी शिक्षाओं को, उनको (ज़बान मुबारक) मुखारबिंद से सुनी हुई बातों को यथा संभव क्रमबद्व करके लिखने का प्रयास कर रहा हूँ। हमारे सिलसिले के सभी बुजुर्ग, परम पूज्य लाला जी एवं परम पूज्य चच्चा जी महाराज, पूज्य ताऊ जी तथा परम पूज्य बाबूजी अपना प्रेम एवं आशीर्वाद, इस पुस्तक के हर पाठक पर बरसाएं । यही मेरी विनती है, उनके पावन चरणों में ।

यह पुस्तक, पुस्तक नहीं वरन् आदर और श्रद्वा की वस्तु है, क्योंकि यह महान संतों की शिक्षा का सार है। भाषा व्याकरण की जो भी त्रुटियॉं हों पर पुस्तक की आत्मा में रसायन है, उस प्रेम के रस का जिसकी अनुभूति जिन लोगों को हुई है वे धन्य हैं। आप इस आदर व प्रेम से ही पढ़ें, नित्य निरन्तर पढ़ें तथा आत्मसात करके अपनायें ।

अन्त में हम उनके आशीर्वाद के आकांक्षी हैं, जिसके फलस्वरूप उनकी शिक्षा को, उनके द्वारा बताई बातों को, उसी ज्योतिर्मय ढंग से प्रस्तुत कर सकूँ जैसा उनके स्थित था । ईश्वर सबको अपने प्रेम से मालामाल करे इस कामना सहित ।

गुरूदेव सबका कल्याण करें ।

विनीत :

दीन्नू

(डा0 वीरेन्द्र कुमार सक्सेना)

बी–1/26, सेक्टर–के, अलीगंज,

लखनऊ । दूरभाष : 2762488

ओउम्

ईश्वर प्राप्ति के लिये चार चीजें आवश्यक हैं :–

1. संस्कार 2. सद्गुरू
3. सतनाम 4. सत्संग

1. संस्कार :– संस्कार तीन प्रकार के होते हैं :–

(अ) पैदाइशी संस्कार – जो मनुष्य पिछले जन्म से साथ लाता है। ऐसे लोगों का जन्म ऐसे वातावरण में होता है जहॉं जन्म से ही ईश्वर नाम के सब साधन मिल जाते हैं । इन्हीं के ज़िम्मे अधिकतर तालीम का काम रहता है ।

(ब) अर्जित संस्कार – ये संस्कार सद्गुरू के सम्पर्क से या कोई और माध्यम से मनुष्य को मिलता है जो वातावरण पर निर्भर करता है अर्थात अनुकूल वातावरण से बढ़ जाता है और लक्ष्य की प्राप्ति भी कर

लेते हैं, परन्तु प्रतिकूल वातावरण से यह सस्ंकार समाप्त सा हो जाता है ।

(स) आंशिक या क्षणिक संस्कार – यह सस्ंकार कभी–कभी किसी समय में ईश्वर की चर्चा से या मृत्यु आदि दुःखद घटनाओं के क्षण भर को या कुछ दिन को मनुष्य के मन में उत्पन्न होता है तथा शीघ्र ही समाप्त हो जाता है । ऐसे मनुष्य इस परमार्थ के रास्ते पर कायम नहीं रहते हैं ।

2. सद्‌गुरू :– वह संत जिनकी पहुॅंच सचखण्ड तक होती है वह सद्‌गुरू कहलाते हैं । बगैर सद्‌गुरू के (यह रास्ता) ईश्वर प्राप्ति नामुमकिन है। सद्‌गुरू को ईश्वर का स्थूल रूप समझना चाहिये । हमारे इस सिलसिले में गुरू दीक्षा के समय, अपनी इच्छा शक्ति से सचखण्ड के दर्शन करा देता है इसीलिये दीक्षा की महत्ता है ।

3. सतनाम :– सद्गुरू के द्वारा प्रदान किया गया नाम ही सतनाम है और अभ्यासी इसी नाम के सहारे ईश्वर तक पहुँच सकता है ।

4. सत्संग :– अभ्यासी के लिये सत्संग उतना ही जरूरी है जितना मनुष्य के जीवन के लिये पानी । जैसे पानी के अभाव में जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है वैसे ही सत्संग के बिना ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती है । इसीलिये सभी संतों ने सत्संग को बहुत महत्व दिया है ।

"बिनु सत्संग विवेक न होई,
राम कृपा बिना सुलभ न सोई"

जब तक इन चारों संस्कार, सद्गुरू, सतनाम और सत्संग की सन्धि नहीं होती तब तक मनुष्य सचखण्ड तक नहीं पहुॅंच सकता है ।

ओउम्

हे परमात्मन् मुझको सिर्फ आपकी जात और हुक्म जिसमें आपकी रजामन्दी है, मंजूर है। यानि मेरा लक्ष्य वहीं है जिसमें आपकी मर्जी है । मैंने इस लोक के ख्याल को और परलोक के ख्याल को आपके वास्ते छोड़ दिया है । आप अपनी दया और कृपा की दृष्टि मुझ पर कीजिए ।

– पूज्य लालाजी साहब

अभ्यास की तीन सीढ़ियाँ
जाप, सुमिरन, ध्यान ।

जाप :– जाप अभ्यास की सबसे पहली सीढ़ी है। भजन, प्रार्थना, मंत्र जाप यह सब जाप के ही अंग हैं । जाप जो केवल वाक– इन्द्रिय द्वारा (अर्थात ज़बान द्वारा जिसमें मन शामिल हो उसके करने से छठे चक्र तक रसाई हो सकती है। परन्तु जब (इन्द्रिय) ज़बान मन और चित्त तीनों शामिल हों तब पूर्ण लाभ होता है। अभ्यासियों को यह प्रयत्न करना चाहिये कि जाप करते समय ज़बान, मन और चित्त तीनों शामिल रखें, यहीं असली जाप है जिसे जिक्रे ख़फ़ी भी कहते हैं ।

सुमिरन :– सुमिरन का शाब्दिक अर्थ याद है। अपने इष्ट गुरू के सुमिरन करने से गुरू से नज़दीकी होती है, और इसी सुमिरन से फ़नाइयत हो जाती है। पहले गुरू के स्थूल में फ़नाइयत होती है जिसकी पहचान

यह है कि जो वस्तुयें गुरूदेव को अच्छी लगती हैं, वही अच्छी लगने लगें । दूसरी फ़नाइयत गुरू के सूक्ष्म में होती है जिसकी पहचान यह है कि गुरू का हर ख़्याल शिष्य पर उतरता है और शिष्य का गुरू पर, यहीं से असली रूहानी तालीम शुरू होती है। स्थूल तथा सूक्ष्म की फ़नाइयत के पश्चात् कारण की फ़नाइयत होती है, अर्थात् शिष्य की आत्मा गुरू की आत्मा में लय हो जाती है। यही पूर्णता है इसी स्थिति को एक जान दो क़ालिब कहते हैं।

ध्यान :– जब सुमरिन की अवस्था से अभ्यासी ऊपर आता है, और उसकी इन्द्रियाँ और मन शान्त होते हैं तो चित्त से वह अपने इष्ट का ध्यान करता है। उसके सामने उसके इष्ट के अतिरिक्त कुछ नहीं रहता है, इसी के द्वारा साधक समाधि, महा समाधि की अवस्था को प्राप्त करता है। जागृत समाधि की अवस्था में भक्त पर ईश्वरीय भेद खुलते हैं। ध्यान की अवस्था से

बढ़ते–बढ़ते अभ्यासी सतलोक तक पहुँच जाता है। जाप एवं सुमिरन के लिये किसी समय की पाबन्दी नहीं है। यह हर समय (चलते–फिरते, काम करते) हर जगह किया जा सकता है परन्तु ध्यान के लिये निश्चित स्थान, निश्चित समय नितान्त आवश्यक है।

मंगला–चरण

बालकण्ड–1

बंदउँ गुरू पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि ।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर ।।

बंदउँ गुरू पद पदुम परागा ।
सुरूचि सुबास सरस अनुरागा ।।

अमिअ मूरिमय चूरन चारू ।
समन सकल भव रूज परिवारू ।।

सुकृति संभु तन बिमल बिभूती ।
मंजुल मंगल मोद प्रसूती ।।

जन मन मंजु मुकुर मल हरनी ।
किएँ तिलक गुन गन बस करनी ।।

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती ।
सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती ।।

दलन मोह तम सो सप्रकासू ।
बड़े भाग उर आवइ जासू ।।

उधरहिं बिमल बिलोचन ही के ।
मिटहिं दोष दुख भव रजनी के ।।

सूझहिं राम चरित मनि मानिक ।
गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक ।।

जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखत सैल बन भूतल भूरि निधान ।।

गुरू पद रज मृदु मंजुल अंजन ।
नयन अमिअ दृग दोष बिभंजन ।।

तेहिं करि बिमल बिबेक बिलोचन ।

बरनउँ राम चरित भव मोचन ।।

नित्य पूजा की विधि

निम्नलिखित नियम पर परम पूज्य बाबूजी ने 1.1.66 को पूज्य भाई साहब एवं सेवक को लिखकर दिये थे । उन्हीं नियमों को मैं यहीं लिखकर यह अनुरोध करता हूँ कि सभी भाई इसे प्रतिदिन करें ताकि उन्हें पूर्ण लाभ पहुँच सके ।

रामायण का पाठ :– रामायण की ग्यारह चौपाइयाँ अभ्यास आरम्भ करने से पहले अवष्य पढ़ें । रामचरित मानस से 11 चौपाइयों का संकलन नीचे लिख दे रहा हँ वैसे प्रेमी जन कोई भी 11 चौपाइयाँ (कम से कम) जो उन्हें रूचिकर हों पढ़ सकते है। पढ़ने की शर्त केवल प्रेम है, प्रेम से पढ़ें ।

(1) जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा ।
करहु सो बेगि दास मैं तोरा ।।

(2) प्रभु पितु मातु सुहृद गुर स्वामी ।
पूज्य परम हित अंतरजामी ।।

(3) कोमल चित अति दीनदयाला ।
कारन बिनु रघुनाथ कृपाला ।।
(4) राम कृपा बिनु सुनु खगराई ।
जानि न जाइ राम प्रभुताई ।।
(5) सोई जानेई जिन देई जनाई ।
जानत तुम्हइ, तुम्हइ होहि जाहीं ।।
(6) अब प्रभु कृपा करहु ऐहि भाँती ।
सब तजि भजनु करौं दिन राती ।।
(7) राम राम कहि जे जमुहाहीं ।
तिन्हहि न पाप पुंज समुहाहीं ।।
(8) मोरें मन प्रभु अस बिस्वासा ।
राम ते अधिक राम करदासा ।।
(9) अस बिचारि जोई कर सतसंगा ।
राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा ।।
(10) रामहि केवल प्रेमु पिआरा ।
जानि लेउ जो जान निहारा ।।
(11) असरन सरन बिरदु संभारी ।
मोहि जनि तजहु भगत हितकारी ।।

ओउम् का जाप

जाप सिर्फ ओउम् का करें । रामायण की चौपाई पढ़ने के पष्चात् कम से कम एक माला ओउम् का जाप निम्नलिखित विधि से करें।

इस ओउम् के जाप में ज़बान बिल्कुल न हिलाई जाये। जाप (सिर्फ मन से) आंतरिक जाप किया जाये। जाप के समय हर प्रकार से ध्यान हृदय चक्र पर रहे और ओउम् शब्द की ठेस बराबर हृदय में लगाते रहें ।

नोट :– राम नाम में भक्ति और ओउम् नाम में शक्ति है। रामायण की चौपाई प्रथम पढ़ने से आशय यही है कि भक्ति से शक्ति ओउम् पर आये । हृदय पर ठेस देने से आशय यह है कि प्रेम जागृत हो जो कि ईश्वर प्राप्ति का निश्चित मार्ग है ।

ओउम् शान्ति का जाप

ओउम् के जाप के बाद ओउम् शांति का जाप भी कम से कम एक माला अपने सिलसिले के बुजुर्गों के लिये करें । ओउम् शांति के जाप में तीन चीज़ों का विशेष ध्यान रखें ।

(अ) जिस बुजुर्ग के लिये ओउम् शांति का जाप करें, ख़्याली तौर पर यह पुख़्ता ख़्याल करें कि वह बुजुर्ग आपके सामने बैठे है।

(ब) अपने गुरूदेव को छोड़कर जब और बुजुर्ग के लिये ओउम् शांति का जाप करें तो यह ख़्याल करें कि यह जाप मैं नहीं मेरे गुरूदेव कर रहे हैं । यानी उस समय अपने को अपने गुरूदेव में लय कर दें । परन्तु जब अपने गुरूदेव के लिये ओउम् शांति का जाप करें तो ख़्याल करें कि (मैं) अर्थात् स्वयं कर रहा हँ और गुरूदेव सामने बैठै हैं। भरसक कोशिष करें कि सिलसिले के सभी बुजुर्गों के लिये ओउम् शांति का

जाप करें, ताकि उनसे निस्बत जायें । यदि किसी कारणवश ऐसा न कर सकें तो कम से कम

एक–एक माला परम पूज्य लाला जी महाराज, पूज्यपाद चाचा जी महाराज, परम पूज्य ताऊ जी महाराज एवं परम पूज्य बाबू जी के लिये बिना नागा अवश्य करें यह सभी दीक्षित सत्संगियों का धर्म है जिन भाईयों को समय हो वह अपने सिलसिले के बुजुर्गों के अतिरिक्त एक–एक माला निम्नलिखित संतों के लिये क्रमानुसार करें ।

(1) गुरू नानक देव जी
(2) संत कबीर दास जी
(3) राय साहब सालिग्राम जी
(4) चैतन्य महाप्रभु जी
(5) स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी
(6) विवेकानन्द जी
(7) पलटू साहब जी
(8) महात्मा गाँधी जी

परमपूज्य बाबूजी अपने श्री मुख से कई बार फरमाया करते थे किस उपरोक्त सभी बुजुर्गों की निस्वत हमारे सिलसिले से हैं और यह सभी बुजुर्ग बड़ी दया की बरकत करते हैं जिनसे हम फ़ैजयाब होते हैं ।

नोट :— यदि समय का अभाव वास्तविक रूप में हो तो एक माला ओउम् शांति के जाप का अपने सिलसिले के सभी बुजुर्गों के चरणों में अर्पित करें, एक माला ओउम् शांति का संसार के सभी संतों के लिये तथा एक माला अपने पूज्यतम गुरूदेव के लिये अवश्य अर्पित करें । परन्तु करने का तरीका वही होना चाहिये जो ऊपर लिखा जा चुका है। हर माला की समाप्ति पर प्रार्थना करें कि इसका जो भी शवाब या पुण्य हो वह उन बुजुर्ग के चरणों में पहुँचे जिनके लिये जाप किया गया है और उनका प्रेम एवं आशीर्वाद हमको मिले ।

ओउम् शांति का जाप इतना प्रभावशाली जाप है कि इसके सही जाप से मृतक आत्माओं को भी फायदा पहुँचाया जा सकता है। यह असली श्राद्ध है । जब ओउम् शांति का जाप दुनियावी लोगों मसलन मॉ–पिता, भाई या अन्य रिश्तेदारों के लिये करें तब जाप समाप्ति के पष्चात् यह प्रार्थना करें :–

''हे प्रभु ! हे गुरूदेव ! इनकी आत्मा जहॉ कहीं भी हो सुख और शांति में रहे और उनका प्रेम आपके पावन चरणों में हो जाये ।

ओउम् शांति ।''

गायत्री मंत्र

ओउम्

ओउम् भूर्भवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्
भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।

भवार्थ :– उस प्राण स्वरूप, दुःख नाशक, सुख स्वरूप श्रेष्ठ तेजस्वी, पाप नाशक देव स्वरूप परमात्मा को हम अन्तरात्मा में धारण करें । वही परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करें। ओउम् ।

नोट – इस गायत्री मंत्र की एक माला नित्य नियम से करें। यह मंत्र वातावरण को शुद्ध करने में तथा हर प्रकार के भय को दूर करने में बेमिसाल है ।

ईश प्रार्थना

कोई भी छोटी सी प्रार्थना या भजन जो दिल की आवाज से पढ़ी जाये पढ़ें । पूज्य ताऊ जी जिस प्रार्थना को बहुत पसन्द करते थे (तथा पूज्य बाबू जी को भी पसन्द थी) तथा रोज पढ़ा करते थे वह नीचे दी जा रही है ।

करूँ इल्तिजा[1] किससे मैं ऐ खुदा ।
नहीं दूसरा कोई तेरे सिवा ।।

सिवा तेरे मुश्किलकुशां[2] कौन है ।
गरीबों का वाली[3] बता कौन है ।।

तू फरमारवा[4] हम हैं फ़रमांपजीर[5] ।
हम उफ्ताद[6] बेकस[7] है तू दस्तगीर[8] ।।

किया मैंने यह जानो– दिल से कबूल[9] ।
कि सच्चा है तू और तेरे रसूल[10] ।।

1. विनती 2. विपत्ति दूर करने वाला 3. दीनबन्धु 4. हाकिम 5. आज्ञाकारी 6. व्यर्थ 7. निराश्रय 8. समर्थ 9. स्वीकार 10. अवतार

हमारा ये ईमान[11] बिलग़ेब[12] है ।
कि तू सब का माबूद[13] लारैब[14] है ।।

भला क्यों कर होवे हमारी मजाल ।
न माने तेरा हुक्म ऐ जुलजलाल[15] ।।

मगर नफ्सोशैता[16] के मकरोफ़रेब[17] ।
लिये लेते हैं अक्ल सबरो–शिकेब[18] ।।

जहॉ फूंका इक वसवसा[19] कान में ।
तज़लजुल[20] पड़ा दीनो ईमान में ।।

पड़ा जिस घड़ी मासियत[21] का हिजाब[22] ।
नहीं सूझता कुछ अज़ाबो[23] सवाब[24] ।।

दिखता है शैतॉ इधर अपना रंग ।
उधर नफ्सेअम्मारा[25] करता है तंग ।।

11. दृढ़ विश्वास 12. हृदय से 13. पूज्यनीय 14. निःसंदेह 15. परम प्रकाशवान 16. मन और वासना 17. छल–कपट 18. सन्तोष–षान्ति 19. वासना 20. अस्थिरता 21. अज्ञान 22. परदा 23. पाप 24. पुण्य 25. तमोगुण

बिछे हर तरफ़ नफ़्सोशैतॉं के जाल ।
बचा अपनी कुदरत से ऐ जुलजलाल ।।

कटी हाय गफ़लत[26] में उम्रे अज़ीज[27] ।
न की नेकोबद[28] में ज़रा कुछ तमीज़ ।।

हुये फेल[29] हम से बहुत नासज़ा[30] ।
हुई हम से वाकई[31] ख़ता पर ख़ता ।।

ख़तायें मेरी अफ्व[32] कर ऐ करीम[33] ।
कि है ज़ात तेरी गफूरूर्रहीम[34] ।।

है अफसोस पास ऐक ख़ोशा[35] नहीं ।
सफ़र ऐसा दूर और तोशा[36] नहीं ।।

मदद मेरी ऐ मेरे रहमान[37] कर ।
मेरी सख़्त मंजिल को आसान कर ।।

रहूँ यूँ मुहब्बत में साबित–कदम[38] ।
कि गाफ़िल[39] न हूँ तुझसे मैं एक दम ।।

26. असावधानी 27. प्रिय आयु 28. भलाई–बुराई 29. कर्म 30. अनुचित 31. घटित 32. क्षमा 33. कृपालु 34. कृतार्थ करने वाला 35. पुण्य फल 36. सम्बल 37. दयालु 38. दृढ़ 39. भूलना

रहूँ या कि दुनियॉं से जाऊं गुज़र ।
न निकलूं तेरे हुक्म से ज़र्रा भर ।।

है दुनियॉं में जो मेहरबानों शफ़ीक ।
यह सब जीते दम के हैं अपने रफ़ीक ।।

सरअंजाम जिस दिन कि आख़िर हुआ ।
हुये कब्र में रख करके एक एक जुदा ।।

न पूछेगा मरघट में आकर कोई ।
कि ऐ ख़स्ताएतन क्या है हालत तेरी ।।

मगर तुझ से उम्मीद है मेरे खुदा ।
कि हर हाल में है तू मुअन्निस मेरा ।।

अमल पर नहीं जोम बिल्कुल मुझे ।
है ख़ैरलनूर का तवस्सुल मुझे ।।

न रूसवा मुझे ऐ खुदा कीजियो ।
मेरी शर्म महषर में रख लीजियो ।।

40. मेहरबान 41. मृत्यु 42. अति पीड़ित 43. हितैषी 44. कर्म
45. अभिमान 46. सहारा 47. तिरस्कार 48. अन्तिम परीक्षण

ख़तायें मेरी बख़्श अब तू तमाम ।

तिफ्‌ल पैगम्बर अली ओ सलाम ।।

कयामत तलक भेजे यारब मदाम ।

पैगम्बर पै अपने दरूदो सलाम ।।

ओऽम्

ओउम् सहनाववतु । सहनौ भुनक्तु ।
सहवीय्र्यम् करवावहै । तेजस्विनावधीतमस्तु ।
मां विद्विशावहै ।
ओउम् शान्ति! शान्ति! शान्ति!

हे पूर्ण ब्रह्म परमात्मन् आप हम दोनों (गुरू–शिष्य) की साथ–साथ रक्षा करें, हम दोनों का साथ–साथ पालन करें। हम दोनों की पढ़ी हुई विद्या तेजोमयी होवे। हम दोनों में परस्पर द्वेष न हो, दोनों की दुई मिट जावे, स्नेह सूत्र में हम दोनों बंधकर एक हो जावें एवं परम लय अवस्था को प्राप्त हों ।

ओउम् शान्ति शान्ति शान्ति ।

विनती

हे सच्चिदानन्दधन! तेरे ही मुझ अपने पर, मेरा आचार्य देव पर, गुरूदेव की आद्योपान्त वंशावली पर, मेरे मातृ–पितृ के वंषजों पर, सन्मार्ग द्योतक इस वंश के पूर्व पुरूषों पर, इस जगत के अन्य सन्तों पर दया दृष्टि की वृष्टि कर। तू ही मेरे मालिक! एक मात्र दयावान है, एक मात्र आधार है ।

हे अखण्ड! हे करूणेश। यह दीन स्तवन तेरे ही नाम के संस्मरण से प्रारम्भ करने की तुझसे भिक्षा मांगता है। क्योंकि तू ही है जो इस जगत में दया करने वालों पर भी दया करने की क्षमता रखता है। हर स्तवन केवल एक परमात्मा देव के लिए है, उस तुझ परमात्मा के लिए जो सृष्टि मात्र को अपनी दृष्टि में रखता हैं, जो दया निधान है, जिसकी दया मात्र ही अखिल ब्रह्ाण्ड को निज कृपा से मालामाल प्रतिसमय कर रही है जो मेरे प्रति निर्णयार्थ, परितोष, दण्ड एवं

दया होने के दिन का मालिक है। हे दयानिधान में तेरे ही स्तुति, पूजा करता हूँ, केवल तुझ एक मात्र से ही सहायता की याचना करता हूँ । हे प्रभु! प्राणि मात्र पर उन सन्मार्गों के पट खोल दे जिन मार्गों से संत वर्ग तेरी ओर चले एवं जिस पर तूने कृपा की । हे शुभेच्छु! मुझे उस मार्ग से बचाना कि जिस पर चलकर प्राणी तेरे क्रोध का पात्र बना हो या मार्ग से भटक गया हो या जो अन्तिम धाम के सन्मार्ग को भूल गया हो। मेरा ज्ञान विश्वास इस जगत के आदि ऋषियों, समस्त अवतारों, श्रुतियों, आदि ग्रन्थों पर उसका अनुगमन करते हुए धर्म परायण हो, नित बढ़े, हे सतपुरूष! तेरी विशेष दृष्टि सदा मुझ पर बनी रहे क्योंकि तू ही एक मात्र अनुकरणीय है ।

ओउम् शान्ति शान्ति शान्ति ।

दरूद शरीफ़

अल्ला हुम्मा सल्लेअला सैयदना मोहम्मदिन,
मादनिल जूदे वल करम व आलेही वसल्लम ।

अर्थ– है प्रभु! हमारे सरदार हजरत मोहम्मद साहब पर जो कि बख्शीश और मेहरबानियों की खान है अपनी कृपा की दृष्टि कर और उनकी सन्तान पर भी अपनी रहमत (कृपा) की वृष्टि कर तथा उन्हें दीर्घायु बना। वे हमेश खुश रहें ।

आमीन! आमीन! आमीन!

महत्व :– यह दरूद शरीफ़ का जाप बुजुर्गों से निस्बत कायम करने के लिये बहुत ही मुफ़ीद है । जब पूजा में तबियत न लगे और दीगर ख़्यालात परेशान करें तब इस जाप को करने से मन स्थिर हो जाता है ।

शजरा

खानदान नक़्शबन्दियाँ

सभी सत्संगी भाइयों को जो कि दीक्षा ले चुके हैं, ध्यान से पहले, प्रतिदिन बिना नागा शजरा पढ़ना आवश्यक है। शजरा पढ़ने का सही तरीका यह है कि एक लाइन शजरे की पढ़ें और एक मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़ें । दरूद शरीफ़ के बाद उन बुजुर्ग की हुजूरी का ख्याल रखते हुए यह प्रार्थना करें कि उनका आशीर्वाद एवं प्रेम मुझे मिले। हर एक शजरे की एक कड़ी के बाद दरूद शरीफ़ पढ़ते जायें ।

1

या इलाही अपनी अजमत और अता के वास्ते ।
नूरे–ईमां दे मुहम्मद मुस्तफा के वास्ते ।।

(अवतरित हजरत मुहम्मद साहब)

हे प्रभु! अपने बड़प्पन और देन के वास्ते और अपने प्यारे हजरत मोहम्मद मुस्तफा के वास्ते मुझे ईमान की रोशनी (सच्चा ज्ञान) दें ।

2

दिल मेरा हो नूरे वहदत से मुनव्वर या वहीद।
हज़रते बूबक्रे जेबे इतक़िया के वास्ते ।।

(खलीफा अबूबक्र सिद्दीकी)

हे प्रभु! सन्तवर अबूबक्र सिद्दीकी साहब जो अत्यन्त नेक हैं, उनके वास्ते तू मुझ पर ऐसी कृपा कर कि मेरा हृदय ज्ञान के प्रकाश से देदीप्यमान हो जाये।

3

या इलाही नफ्से –काफिर से मुझे इबलीस से ।
ले बचा सुलेमान मुर्शिद बासिफ़ा के वास्ते ।।

(आचार्य सुलेमान फ़ारसी)

हे प्रभु! पवित्रता की मूर्ति हज़रत सन्त सुलेमान साहब के वास्ते तू मुझे अहंकार और शैतान (माया) के छल फ़रेबों से बचा ।

4

या इलाही इश्क से अपने मुझे कर सर बुलन्द ।
हज़रते क़ासिम इमामे बेरिया के वास्ते ।।
(आचार्य इमाम क़ासिम बिन मुहम्मद)

हे प्रभु! सन्तवर क़ासिम साहब के वास्ते मुझे अपने प्रेम से मालामाल कर ।

5

या इलाही इश्क़ की आतिश से हो सीना कवाब ।
जाफ़रे सादिक इमामे पेशवा के वास्ते ।।
(आचार्य इमाम जाफ़र सादिक़)

हे प्रभु! सन्मार्ग दर्शक सन्त जाफ्र सादिक़ साहब के वास्ते तू प्रेम की ऐसी अग्नि मेरे भीतर प्रज्वलित कर जिससे जल कर मेरा हृदय भस्म हो जाये अर्थात् सिवाय तेरे प्रेम के और कोई इच्छा शेष न रहे ।

6

या इलाही जुज़ तेरे भूलूॅं मैं सब दुनियां और दीन ।
बायाज़ीदे पेशवा मर्दे खुदा के वास्ते ।।

(आचार्य बायज़ीद बास्तामी)

हे प्रभु! सत्य मूर्ति पथ–प्रदर्षक सन्त बायज़ीद बास्तामी के वास्ते मैं आपके सिवाय लोक और परलोक सब को भूल जाऊॅं ।

7

या इलाही फ़ज़्ल से दे दौलते फुक्रो–फ़ना ।
बुलहसन ख़्वाजा हमारे बासिफ़ा के वास्ते ।।

(आचार्य अबुलहसन ख़कीना)

हे प्रभु! सन्त हज़रत अबुलहसन साहब के वास्ते अपनी दया से मुझ को फ़क़ीरों की दौलत अर्थात् अपना प्रेम और लय अवस्था प्रदान कीजिये ।

8

या इलाही ता–अबद कायम रहे ये सिलसिला ।
ख़्वाजये बिलक़ासिमी नूरूलहुदा के वास्ते ।।
(आचार्य अबुलक़ासिम गुरगानीं)

हे प्रभो! सन्त अबुल क़ासिम साहब के वास्ते हमारी यह वंश परम्परा प्रलय तक बनी रहे ।

9

या इलाही जब मैं तेरा नाम लूॅं तब हो हुजूर ।
बूअली मक़बूल दरगाहे– खुदा के वास्ते ।।
(आचार्य बूअली फ़रमादी)

हे प्रभो! सन्त बूअली साहब जिनको परमात्मा ने अपना लिया, उनके वास्ते जब मैं आपका नाम उच्चारण करूं तब आपकी हुजूरी नसीब हो ।

10

या इलाही कर हिज़ाबे– तन से मुझको पाक साफ़ ।
ख़्वाजा यूसुफ कुत्बे आलम बाखुदा के वास्ते ।।
(आचार्य अबूयूसफ़ हमदानी)

हे प्रभो! परमसन्त यूसुफ़ साहब जो संसार भर के कुतुब (सन्त शिरोमणि) हुए, उनके वास्ते मेरे शरीरिक विकारों को दूर कीजिए ।

11

या इलाही इज़्जते दुनियॉं व दीन होवे अता ।
इब्दे ख़ालिक इज्दवानी बाहया के वास्ते ।।
(आचार्य अब्दुल ख़ालिक इज्दवानी)

हे प्रभो! सन्त अब्दुल ख़ालिक इज्दवानी के वास्ते लोक और परलोक की इज़्ज़त प्रदान कीजिए ।

12

या इलाही कर अता ईमां कि जिसके बाद कुफ्र ।
हो न हज़रत ख़्वाजा आरिफ बासिफ़ा के वास्ते ।।
(आचार्य ख़्वाजा आरिफ़ रेवगिर)

हे प्रभो! पवित्र आत्मा सन्त ख़्वाजा आरिफ़ के वास्ते सच्चा ज्ञान दीजिए ताकि अज्ञान का नाश हो ।

13

दूर कर जिस्मी अलालत और रूहानी मेरी ।
ख़्वाजये महमूद मुर्शिद वाजिया के वास्ते ।।
(आचार्य महमूद अबुलख़ैर फ़ग़नवी)

हे प्रभो! तेजस्वी सन्त ख़्वाजा महमूद अबुलख़ैर फ़ग़नवी के वास्ते मेरे मन और शरीर की बीमारियों को दूर कीजिए ।

14

या इलाही दूर कर दुनियां और दीन के दर्दों दुःख ।
हज़रते ख़्वाजा अज़ीज़ॉ बादशा के वास्ते ।।
(आचार्य ख़्वाजा अली अज़ीज़)

हे प्रभो! राजऋषि सन्त ख़्वाजा अज़ीज़ के वास्ते लोक और परलोक के दुःखों को दूर कीजिए ।

15

या इलाही शरअ पर जब तक जिऊँ कायम रहूँ ।
हज़रते ख़्वाजा मोहम्मद बाअता के वास्ते ।।
(आचार्य महमूद बाबा सय्यासी)

हे प्रभो! ख़्वाजा मोहम्मद (जिनको परमात्मा ने बख़्श दिया) के वास्ते तू ऐसी कृपा कर कि जब तक मैं जीवित रहूँ धर्म शास्त्र पर दृढ़ रहूँ ।

16

या इलाही हिफ्ज़े ईमां वक़्ते मुर्दन कीजिओ ।
हज़रते मीरे कुलाले पारसा के वास्ते ।।
(आचार्य सादात अमीर कलाल)

हे प्रभो! सन्त हज़रत मीर कलाल पारसा के वास्ते मरते समय तक मेरे ईमान की रक्षा करना अर्थात् ईमान पर कायम रखना ।

17

या इलाही मुझ से आमाले शनीआ को छुड़ा ।
शह बहाउद्दीन अकमल बासिफ़ा के वास्ते ।।
(आचार्य प्रवर चक्र भेदन मार्ग दर्शक बहाउद्दीन)

हे प्रभो! परम सन्त पवित्र आत्मा बहाउद्दीन साहब के वास्ते मुझ से बुरे कर्मों को छुड़ा ।

18

या इलाही मुझ पै होवे नूरे–बहदत आशक़ार ।
शह अलाउद्दीन मुर्शिद रहनुमा के वास्ते ।।
(आचार्य अलाउद्दीन अत्तार)

हे प्रभो! पथ प्रदर्शक सन्त अलाउद्दीन के वास्ते मुझे अपने प्रेम का प्रकाश प्रदान कीजिए ।

19

या इलाही दे अमामिन कुल्ले दाइन और बला ।
हज़रते याकूब चर्ख़े पुर्जिया के वास्ते ।।
(आचार्य याकूब चर्ख़ी)

हे प्रभो! तेजस्वी सन्त याकूब चर्ख़ी साहब के वास्ते मुझे हर तरह की मुसीबत और बलाओं से अपनी रक्षा में रखिए ।

20

या इलाही पुल पै और महशर में हो पीरों का साथ ।
ख़्वाजये अहरार रासुल इत्तक़िया के वास्ते ।।
(आचार्य अब्दुल्ला नासिरूद्दीन अहरार)

हे प्रभो! दृढ़ विष्वासी सन्त ख़्वाजा अहरार साहब के वास्ते मुझ को पुल पर और कयामत के दिन वंश के आचार्यों का साथ हों ।

21

या इलाही जुहदो तक़वा और मुहब्बत अपनी दे ।
हज़रते ख़्वाजा मोहम्मद पारसा के वास्ते ।।
(आचार्य मुहम्मद ज़ाहिद)

हे प्रभो! पवित्र आत्मा सन्त ख़्वाजा मोहम्मद साहब के वास्ते मुझ को तप, पवित्रता और अपना प्रेम दीजिए ।

22

या इलाही सारे इसियां और निसियां कर मुआफ़ ।
शाह दरवेशे मोहम्मद मुर्तजा के वास्ते ।।
(आचार्य मुहम्मद मुर्तज़ा)

हे प्रभो! सन्त मुहम्मद दरवेश साहब के वास्ते मेरे पापों और भूलों को क्षमा कीजिए ।

23

या इलाही दोस्त मेरे होवें हरदम शादमां ।
ख़्वाजा उमकंकी मोहम्मद पारसा के वास्ते ।।
(आचार्य ख़्वाजा मुहम्मद उमकंकी)

हे प्रभो! पवित्र आत्मा सन्त ख़्वाजा मोहम्मद उमकंकी साहब के वास्ते ऐसी कृपा कीजिये कि मेरे मित्र सदैव प्रसन्नचित रहें ।

24

या इलाही तू हो बाक़ी और सब को जाऊँ भूल ।
ख़्वाजा अब्दुल बाक़ी मुर्शिद रहनुमा के वास्ते ।।
(आचार्य ख़्वाजा अब्दुल बाक़ी)

हे प्रभो! पथ प्रदर्षक सन्त ख़्वाजा अब्दुल्ल बाक़ी साहब के वास्ते ऐसी कृपा कर कि तेरे सिवाय सबको भूल जाऊँ ।

25

या इलही या क़रीबो–क़ुर्ब कर अपना अता ।
ग़ौसुल–आज़म शैख़ अहमद पेशवा के वास्ते ।।
(आचार्य दिगन्त इमाम ख़्वानी मुजहिद उल्फ़सानी शेख़ अहमद फ़ारूक़ी सरहिन्दी)

हे प्रभो! पथ प्रदर्षक परम सन्त आचार्य दिगन्त शेख़ अहमद साहब के वास्ते मुझे अपना सामीप्य प्रदान कीजिए ।

26

या इलाही हुब्बे पीराने तरीक़त मुझको दे ।
हज़रते मासूम रासुल इतकिया के वास्ते ।।
(आचार्य मुहम्मद मासूम सरहिन्दी)

हे प्रभो! दृढ़ विश्वासी सन्त मासूम साहब के वास्ते मुझको अपने वंश के आचार्यों के प्रति प्रेम दीजिए ।

27

या इलाही शिर्को कुफ्रो मासियत से दूर रख ।
शैख़ सैफुद्दीन मुर्शिद रहनुमा के वास्ते ।।
(आचार्य सैफुद्दीन साहब)

हे प्रभो! पथ प्रदर्शक सन्त शैख़ सैफुद्दीन साहब के वास्ते मुझे दुई, नाफ़रमानी और अज्ञानता से दूर रखिये ।

28

या इलाही ग़ैर का मोहताज मर कर मेरे रब ।
सैयदे नूरे–मुहम्मद मुक़तदा के वास्ते ।।
(आचार्य नूर मुहम्मद बदायूंनी)

हे मेरे पालन पोषण करने वाले प्रभो! सन्त नूर मुहम्मद शाह के वास्ते सिवाय मेरे गुरू देव के मुझे दूसरे के आश्रित मत कीजिए ।

29

या इलाही ग़ैब से रोज़ी दे ऐ रोज़ी रसां ।
शम्स दीं महबूब मुहहर मीरज़ां के वास्ते ।।
(आचार्य शम्शुद्दीन जान जाना शहीद हबीबुल्लाह मिरजा मुरादाबादी)

हे प्रभो! परमात्मा के प्यारे सन्त शमशुद्दीन साहब के वास्ते मुझको ग़ैब से रोज़ी दीजिए ।

30

या इलाही दे मुझे तौफ़ीके–ऐमाले–हसन ।
हज़रते ख़्वाजा नईमुल्लाह शाह के वास्ते ।।
(आचार्य नईमुल्लाह शाह बहराईची)

हे प्रभो! आचार्य नईमुल्लाह शाह के वास्ते मुझे शुभ कर्म करने की प्रेरणा दीजिए ।

31

या इलाही अपनी रहमत से तू दे दिल की मुराद ।
शाह मुरादुल्लाह मक़बूले–खुदा के वास्ते ।।
(आचार्य शाह मुरादुल्लाह साहब बहराईच
समाधि लखनऊ)

हे प्रभो! सन्त मुरादुल्लाह साहब के वास्ते अपनी दया से मेरे मन की इच्छा को पूरा कीजिए ।

32

या इलाही शाद रख अपनी मुहब्बत में मुझे ।
कुतबे़–आलम बुलहसन नुरूलहुदा के वास्ते ।।
(आचार्य सैयद बुलहसन नसीरावादी)

हे प्रभो! सन्त शिरोमणि बुलहसन साहब के वास्ते मुझे अपने प्रेम में डूबा रखें ।

33

या इलाही रहम कर मजरूह आसी पर सदा ।
मौलवी अहमद अली खां रहनुमा के वास्ते ।।
(आचार्य हाजी अहमद अली खां मऊ
रशीदाबादी कायमगंजी)

हे प्रभो! सन्त अहमदअली खां साहब के वास्ते मुझ पापी पर सदैव दया दीजिए ।

34

या इलाही तीरे– वहदत से मुझे मजरूह कर ।
फ़ज़्ल अहमद खॉ फक़ीरे बेनवा के वास्ते ।।

(आचार्य प्रवर सैयद मुर्शिद मौलाना फ़ज़्ल अहमद ख़ॉ रायपुरी)

हे प्रभो! सच्चे सीधे सन्त मौलवी फ़ज़्ल अहमद खॉ साहब के वास्ते मेरे हृदय को अपने प्रेम के बाण से ऐसा घायल कीजिऐ कि उसमें दुई बिल्कुल न रहे।

35

या इलाही फ़ज़्ल से दे मुझको फ़ज़्ले अहमदी ।
'राम' फ़ज़्ली और 'रघुबर' बाअता के वास्ते ।।

(सन्त सतगुरू महामन श्री रामचन्द्र जी फतेहगढ़ी एवं तस्य अनुज रघुबर दयाल जी कानुपरी)

हे प्रभो! सन्त सतगुरू रामचन्द्र जी महाराज एवं उनके भाई सन्त रघुबर दयाल जी के वास्ते मुझको अपना फ़ज़्ल और दया प्रदान कीजिए ।

36

पीर से उल्फत हो मुझको और बनूॅं उनकी मुराद ।
राम के 'श्रीकृष्ण' की अनुपम दया के वास्ते ।।

(परमसन्त डाक्टर श्रीकृष्ण लाल जी सिकन्द्राबादी)

हे प्रभो! आचार्य सन्त श्रीकृष्ण लाल जी के वास्ते मुझ पर ऐसी कृपा करें कि मुझे गुरू चरणों में प्रेम हो और मैं उनका मुराद बनूॅं।

37

या इलाही पीर से उल्फत हो मुझको और बनूं मक़बूले राम।
राम, रघुबर, श्रीकृष्ण के प्रिय श्यामलाल के वास्ते ।।

(परम सन्त डा0 श्याम लाल सक्सेना गाज़ियाबादी)

अर्थ :– हे प्रभो! आचार्य श्यामलाल जी के वास्ते मुझ पर ऐसी कृपा करें कि मैं पूज्य समर्थ सद्गुरू परम संत रामचंद्रजी महाराज, पूज्य परमसंत रघुवर दयालजी साहब और परम संत श्रीकृष्णलाल जी का प्रिय बन जाऊॅं

नोट :– ''शजरे का 37 वां शजरा पूज्य बाबूजी ने स्वंय ही लिखा है तथा पूज्य बाबूजी (डा0 श्याम लाल सक्सेना) ने अक्टूबर 1981 के गाजियाबाद भंडारे के अवसर पर जब अपने उत्तराधिकारी की घोषणा सत्संग में की थी तभी यह भी निर्देश दिए थे कि बुजुर्गों का आदेश है कि शजरे में (38 वीं) यह लाइन बढ़ा दो।''बुजुर्गों का और मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है''

38

या इलाही पिशर दे मानिन्द राजेन्द्र वीरेन्द्र के ।
मिटा दें जो जिंदगी अपनी, पीर और मुर्शिद की रज़ा के वास्ते।।

(आचार्य डा0 राजेन्द्र कुमार सक्सेना, गाजियाबाद
एवं तस्य अनुज डा0 वीरेन्द्र कुमार सक्सेना, लखनऊ)

अर्थ : हे प्रभो! आचार्य राजेन्द्र जी एवं उनके अनुज आचार्य वीरेन्द्र जी के वास्ते ऐसी कृपा हो कि हर एक को उनकी तरह नेक औलाद दे जो अपने पीर

और मुर्शिद की मरज़ी, प्रेम और सेवा के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दें ।

सिलसिले के बुजुर्ग में फ़नाइयत के लिये जिस बुजुर्ग में फनाइयत चाहते हैं उनके शजरे की लाइन उनकी हुजूरी का मुकम्मल ख़्याल करते हुये, पढ़ें तथा 101 माला दरूद शरीफ की करें, इस जाप के समय किसी दीगर ख़्याल को न आने दें । यह जाप बराबर कम से कम एक महीना करें इस जाप के लिये सबसे अच्छा समय रात को होता है (रात्रि 12 बजे से 5 बजे तक) परन्तु इस जाप को करने से पहले अपने गुरू से मजबूत निस्बत जरूरी है ।

प्रार्थना

हे! मेरे परवरदिग़ार! तू ही मेरा सच्चा माबूद़ है! तू ही मेरा सच्चा मक़सूद है! तू ही मेरा सच्चा मतलूब है! हे मेरे परवरदिगार तेरी रज़ा मेरी रज़ा ।

हे परमात्मन् मुझे उस रास्ते पर चलने की हिम्मत और तौफ़ीक अता कर जिस पर चलकर तेरे बन्दे मक़बूल हुए हों और तेरे वायसे खुशी हुए हों और उस रास्ते से दूर रख जिस पर चलकर तेरे बन्दे गुमराह हुए हों और तेरे वायसे नाखुशी हुए हों – आमीन्।

चौमुखा जाप

या वहावो (ऊपर आसमान
की ओर)
(3)

या फत्ताहो (दायें कन्धे पर) (1)

(2) या रज़्ज़ाको (बायें कन्धे पर)

(4)
या अल्लाह (दिल पर)

अर्थ :– (1) हे सफलता देने वाले (2) हे रोज़ी देने वाले (3) हे पालन पोषण करने वाले (4) तू परमात्मा केवल तू ही है।

नोट :– दुनियावी कामों की सफ़लता के लिये यह जाप विशेष लाभकारी है। यह जाप सुबह उठते ही कम से कम 11 बार करें। जब किसी दुनियावी काम के लिये जायें, यह अवष्य करके जायें, बहुत ही फायदा होता है ।

ध्यान

शजरा पढ़ने के बाद करीब आधा घंटा ध्यान करें । हर अभ्यासी, जो ध्यान विशेष उन्हें बताया गया है, वही करें (हृदय चक्र, आज्ञा चक्र या गुरू की शक्ल का) ध्यान के सम्बन्ध में यदि कोई जानकारी करनी हो तो व्यक्तिगत रूप से सम्बन्ध स्थापित करें ।

अस्सलाम

अस्सलाम अय हादिये[1] इश्क़े जली[2]
अस्सलाम अय मुर्शिदे[3] बज़्मे[4] ख़फ़ी[5]
अस्सलाम अय पासबाने[6] बेखुदी[7]
अस्सलाम अय नाज़िने[8] खुद–आगही[9]
अस्सलाम अय सत्‌गुरू की आत्मा
अस्सलाम अय चश्मे दिल के देवता । 1 ।
आपकी शाने वजूद बासऊद[10]
फुक्र[11] की ज़ामिन थी बावस्फ़े[12] सऊद[13]
तुश्नये[14] मफ़्हूम[15] रम्ज़[16] हस्ते[17] वजूद[18]
भेजते हैं आज सब मिलकर दरूद[19]

1. पथ प्रदर्षक 2. गुरू 3. पीर 4. दिल की महफिल 5. देखने वाला छुपा हुआ 6. निगहबान 7. बस्ती 8. अतिसुन्दर 9. स्वयं को जानना 10. नेक 11. फ़कीर 12. तारीफ़ 13. नेक 14. प्यासा 15. समझ 16. भेद 17. हस्ती 18. जात 19. श्रद्धा की भेंट

अस्सलाम अय पीर कामिल सत्गुरू
अस्सलाम अय संतमत की आबरू । 2 ।

ज़ाते–अक़दस[20] थी बफ़ैजाने[21]– हसीं[22]
खुद बखुद चरनों पै झुकती थी जंबीं[23]
कर दिए इसरारेहक[24] पल में नगीं[25]
जिस पै डाली इक नज़र होकर करीं[26]

अस्सलाम अय पाकबातिन[27] ऐन–नूर[28]
अस्सलाम अय मख़जने[29] जाने–सरूर[30] । 3 ।

नक़्श दिल पर आपके इर्शाद[31] हैं
मंत्र अब भी सेवकों को याद हैं
तिश्नये[32] दिल बाचश्मेनम[33] बरबाद हैं
आप ही से तालिबे[34] इमदाद[35] हैं

अस्सलाम अय आशिक़े रस्मोहिजाब[36]
अस्सलाम अय खुद सवालो खुद जवाब । 4 ।

20. नेक जात 21. शक्ति प्रसार 22. सुन्दर 23. माथा 24. परमात्म ज्ञान 25. जड़े हुए 26. नजदीक 27. अन्दर से शुद्ध 28. शुद्ध रोशनी 29. खजाना 30. आनन्द 31. हुक्म 32. प्यास दिल 33. भीगी ऑख 34. मांगना 35. मदद 36. पर्दे की रस्म

किस तरह अब आपके दर्शन करें
हम यहां हैं आप हैं सतलोक में
आसरा अब ज़िन्दगी में किसका लें
आप मालिक हैं तवज्जो दें न दें
अस्सलाम अय रूह साज़े–जिन्दगी[37]
अस्सलाम अय नूह नाज़े–बन्दगी **| 5 |**
दिल गमें–फुरक़त[38] से घबराता है जब
यह दुआ करती है शर्मे रमतलब[39]
शाने आली[40] औ करम से क्या अजब
ज़िक्रे औ दर्शन से नवाज़े[41] रोज़े शब[42]
दास तो मझधार में है बासलाम
बोलता है आपकी जय जय मुदाम **| 6 |**

37. जिन्दगी का ताज 38. जुदाई का गम 39. रास्ते की
40. बड़ी 41. देने वाला 42. रात–दिन

गुरू वन्दना

(प्रातः कालीन)

हे दीन बन्धु दयालु गुरू ।
        केहि भांति तब गुण गाऊँ,
तुम्हरे पवित्र चरित्र केहि विधि
        नाथ कहिके सुनाऊँ मैं ।
जिह्मा अपावन है मेरी
        गुरू नाम कैसे लीजिये,
मन फँस रहा भाव–जाल में,
        वह किस तरह प्रभु दीजिये ।
धन, धान्य माया रूप है ।
        क्यों कर निछावर कीजिए,
संसार सागर में फंसा
        गुरू ध्यान कैसे कीजिए ।
तन कैसे अर्पण कर सकूँ।

यह तो महापापी अधम,
धन धान्य और मन देके गुरू
तुम से नहीं उद्धार हम ।
श्रद्धा सुमिरनी भेंट कर
मैं दीन हो चरणों पड़ा,
मैं पतित हूं तुम पतित पावन,
आपका है आसरा ।
भव सिंधु में हूं फँस रहा
गुरूदेव! मुझे उठाइये,
गहि बांह दीना नाथ
अपराधी को पार लगाइये ।
जो दीन हो चरणों पड़े,
हे नाथ! वे सारे तरे,
तेरा भिखारी तुम बिना,
प्रभु आसरा किसका करें ।
मैं दीन हूं, तुम दीनबन्धु
मैं अधम तुम नाथ हो,
मैं हूं, अनाथ कृपा निधान,
तो तुम अनाथों के नाथ हो ।

माता–पिता, सुत, भ्रात, भार्या
कोई साथ न जायेगें ।
उस पाप कुम्भी नरक में
कोई न हाथ बटायेगें ।
यह सोच के तब शरण आया
अब ठिकाना है नहीं,
बस पार कर दो मेरी नौका
और अपना है नहीं ।
हे दीन बन्धु दयालु गुरू ।
केहि भांति तब गुण गाऊँ,
तुम्हरे पवित्र चरित्र केहि विधि
नाथ कहिके सुनाऊँ मैं ।

गुरू वन्दना

(सायं कालीन)

हे दीन बन्धु दयालु गुरू ।
स्वीकार कोटि प्रणाम् हो ।
महिमा तुम्हारी है अगम,
अतिशय पवित्र महान् हो ।।
माया की दलदल में फंसा हूं
बस नहीं चलता मेरा ।
सब हौसले हारा हुआ हूं,
आपका है आसरा ।।
हैं आपके पदकंज निर्मल,
हरण भव–संताप हैं ।
फिर भी प्रभो होकर तुम्हारा,
शेष मेरे पाप हैं ।
हूं दीन हींन दुखी अंकिचन,
लेष अधिकारी नहीं ।

फिर भी पतित को त्राण देना,
तुमको कुछ भारी नहीं ।।
मन एक और अनेक बन्धन,
में बंधा है रो रहा ।
कोमल हृदय समरथ सन्मुख,
आपके सब हो रहा ।।
अतिदुखित हूं, अति विकल हूं,
मन जल रहा त्रय ताप से ।
प्रभु शान्ति जल बरसाइये,
आषा लगी है आप से ।।
मेरे महादानी पिता !
मुझ पर अनुग्रह कीजिए ।
मन मधुप हो पद–पद्म पर,
वरदान ऐसा दीजिए ।।
नंहि नर्क से भय कुछ मुझे
नहिं स्वर्ग की है कामना ।
जहां भी रहूं, क्षण भर न भूलूं,
दीन की है याचना ।।

संतोष अब होता नहीं,
        हे देव करूणा कीजिए ।
निज से विलग मत कीजिए,
        मन प्रेम से भर दीजिए ।।
मैं हूं शरण शरणागते,
        हे दीनबन्धु दयानिधे ।
भव ताप हरण नमामिते,
        हे पूज्यतम् करूणानिधे ।

नोट :– ध्यान के समापन के पष्चात् बहुत विनयपूर्वक प्रातःकाल में प्रातः कालीन तथा सायंकाल में सायंकालीन गुरू वन्दना पढ़ें । दिल प्रेम से भरा होना चाहिये तभी सच्ची गुरू वन्दना है अन्यथा ख़ाना पूरी है। तत्पष्चात् :–

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुष्चं सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वम् मम् देव देव ।।

सर्वसुख प्रार्थना

सबका भला करो भगवान
सबका भला करो भगवान

सब पर दया करो भगवान
सब पर दया करो भगवान

सब के कष्ट हरो भगवान
सब के कष्ट हरो भगवान

सबकी पीर हरो भगवान
सबकी पीर हरो भगवान

अवगुण दूर करो भगवान
अवगुण दूर करो भगवान

सबको सन्मति दो भगवान
सबको सन्मति दो भगवान

सबको क्षमा करो भगवान
सबको क्षमा करो भगवान

सब में आप रमो भगवान
सब में आप रमो भगवान

इसके पष्चात् गुरूदेव से अत्यन्त गिड़गिड़ा कर इस प्रकार प्रार्थना करें । प्रत्येक पंक्ति तीन बार पढ़ें ।

प्रार्थना

गुरूवर मेरी डोर तेरे हाथ,
गुरूवर मेरी डोर तेरे हाथ
गुरूवर मेरी लाज तेरे हाथ,
गुरूवर मेरी लाज तेरे हाथ
गुरूवर तेरी याद मेरे साथ,
गुरूवर तेरी याद मेरे साथ
गुरूवर तेरी दुआयें मेरे साथ,
गुरूवर तेरी दुआयें मेरे साथ
गुरूवर मैं तो पड़ा हूं तेरे द्वार,
गुरूवर मैं तो पड़ा हूँ तेरे द्वार
गुरूवर करियो मेरा बेड़ा पार,
गुरूवर करियो मेरा बेड़ा पार
गुरूवर मेरी लाज तेरे हाथ,
गुरूवर मेरी लाज तेरे हाथ

गुरूवर पकड़े रहियो मेरा हाथ,
    गुरूवर पकड़े रहियो मेरा हाथ
गुरूवर जीवन भर न छूटे साथ,
    गुरूवर जीवन भर न छूटे साथ
गुरूवर मुझे बना लो अपना दास,
    गुरूवर मुझे बना लो अपना दास

दुआ

रहम तेरा हर घड़ी दरकार है ।
गर करम कर दो तो बेड़ा पार है ।

रहम कर अपने आइने करम को न भूलना
हम तुझे भूले हुये हैं तुम हमें न भूलना

ख़्वार है बदकार है जिल्लत में हैं डूबे हुये
जैसे भी हैं हम तेरे महबूब की खिदमत में हैं

ख़ल्क़ के रौंदे गये दुनिया के ठुकराये हुये
आये हैं दर पर तेरे दोनों हाथ फैलाये हुये

या इलाही जब तबाही में गिरे किसी का जहाज
रहम अपना कीजिये बन्दा नवाज़ बन्दा नवाज़

दुआ

पूजा समाप्त करने के पश्चात् प्रति दिन यह दुआ पढ़ें ।

जामे राहत से सभी सरशार हों ।
सबके सब नावाक़िफ़े आज़ार हों ।।
सबको हासिल हो फ़रागे़ ज़िन्दगी ।
सबको रोशन हो चिरागे जिन्दगी ।।
सबकी ख़ैरो आफ़ियत की है दुआ ।
अहले आलम में हो इक इक का भला ।।
मुब्तलाये दर्दे ग़म कोई न हो ।
तेरा महरूमे करम कोई न हो ।।

विनती

हर अभ्यासी को रोज पूजा के बाद निम्नलिखित विनती करनी चाहिए ।

(1) हे प्रभु! मेरी आज की पूजा का समस्त पुण्य (शवाब) मेरे गुरूदेव, मेरे सिलसिले के बुजुर्गों को तथा दुनिया के सभी संतों के चरणों में पहुँचे ।

(2) हे प्रभो! मुझे आशीर्वाद दीजिये कि मैं अपने गुरूदेव तथा अपने सिलसिले के बुजुर्गों का नाम रोशन करूँ ।

(3) हे प्रभु! हम पर ऐसी दया कीजिये कि मुझसे कोई भी ऐसा गुनाह सरज़द न हो या कोई ऐसा काम, जाने अनजाने में न हो जाये जिससे हमारे सिलसिले के बुजुर्गों की बदनामी हो।

(4) हे प्रभु! आपकी सभी नियामतें दया मुझ तक हमारे सिलसिले के बुजुर्गों के जरिये पहुँचे ।

(5) हे प्रभु! हमको हिम्मत व शाक्ति दीजिये कि हम आखिरी वक़्त तक इस सच्चे रास्ते पर कायम रहें।

(6) हे प्रभु! मुझे आपकी ज़ात (निर्गुण रूप) को छोड़कर किसी का भी भरोसा न हो ।

(7) हे प्रभु! वख्त आख़ीर (अन्त समय) सिवाय गुरूदेव के और किसी भी चीज की याद बाक़ी न रहे ।

(8) हे प्रभु! मेरे सिलसिले के बुजुर्गों का वख्त –आख़ीर अच्छा हो ।

(9) हे प्रभु! मुझ पर ऐसी दया कीजिये कि मैं अपनी गुज़र हक हलाल तथा मेहनत की कमाई पर करता रहूं ।

(10) हे प्रभु! मुझे अपनी सच्ची भक्ति व प्रेम दीजिये।

दिन चर्या

(1) सूरज निकलने से पहले उठें, बिस्तर पर बैठे–बैठे अपने गुरू का ध्यान करें और ख़्याली तौर पर अपना सर उनके चरणों में रखकर सुबह की प्रार्थना (अधोलिखित प्रार्थना) करें ।

(2) बिस्तर छोड़ने के पष्चात् ... ओउम् राम श्रीराम जय जय राम, जय रघुबर जय कृष्ण जय श्याम, 'जय जय राम' को बराबर जपते रहें और अपनी नित्य क्रियायें करते रहें जबान से यह नाम जपते रहें ।

(3) प्रातः निश्चित समय तथा निश्चित स्थान पर अपना आन्तरिक अभ्यास करें ।

(4) अपने सांसारिक कार्यों को करते हुये भी बराबर गुरू का सुमिरन करते रहें ।

(5) शाम को यदि समय हो तो बुजुर्गों के जीवन चरित्र पढ़ें ।

(6) रात्रि में निश्चित समय पर अपना आंतरिक अभ्यास करें।

(7) सोने से पहले दिन भर के कार्यों पर गौर करें और जो त्रुटियां हो गई हों उनके लिये वास्तविक पश्चाताप करें। ईश्वर से क्षमा याचना करें और भविष्य में पुनः न करने का संकल्प लें। इस ख़्याल में सोयें कि मेरा सिर श्री गुरूदेव के चरणों में है ।

सुबह की प्रार्थना

हर अभ्यासी सुबह के वक़्त बिस्तर पर ही बैठे–बैठे यह ध्यान करे कि उनके गुरूदेव उनके सामने बैठे हुये हैं और ख़्याली तौर पर अपना सर उनके चरणों में रखे और ये प्रार्थना करें ।

(1) हे गुरूदेव! मैं आपके चरणों में प्रणाम करता हूँ।

(2) मुझे यह आशीर्वाद दीजिये कि आज दिन भर मैं किसी भी क्षण आपके ख़्याल से वंचित न रहूं ।

(3) अपने सिलसिले के सभी बुजुर्गों को प्रणाम करता हूँ।

(4) दुनिया के सभी संतों के चरणों में प्रणाम करता हूँ।

(5) चारपाई से दाहिना पैर पहले नीचे रखें और कहें कि ''हे गुरूदेव मेरी रक्षा करें'' और इसके पष्चात् कहें ।

ओउम् राम श्री राम जय राम जय जय राम ।
जय रघुबर जय कृष्ण जय श्याम जय जय राम ।।
इस मंत्र का उच्चारण बराबर करते रहें ।

सोते वक़्त की प्रार्थना

(1) हे प्रभु! मेरे गुनाहों को माफ कीजिये ।

(2) हे प्रभु! मेरी बुरी आदतों को छुड़ाइये ।

(3) हे प्रभु! मुझे बुराइयों से बचाइये ।

(4) हे प्रभु! मुझे नफ्शे शैतानी से बचाइये।

(5) हे प्रभु! हमारी दुनियावी परेशानियों को दूर कीजिये।

(6) हे प्रभु! आज दिन भर जो गलतियां मुझसे हुई हैं, उनका मैं पश्चाताप करता हूँ और माफी चाहता हूँ और आईन्दा न करने की तौबा या प्रतिज्ञा करता हूं।

(7) सोते समय बिस्तर पर ही बैठकर या लेटे–लेटे ध्यान करें और इस विचार में कि मेरा सिर गुरूदेव की गोद में है, सो जायें।

साधक का भोजन

दुनिया के सभी संतों तथा बुजुर्गों ने अभ्यासी के लिये खाने की बहुत बंदिश लगाई है। जिसका मुख्य कारण यह है कि जैसा मनुष्य खाना खाता है वैसा ही उसका मन बनता है। परम पूज्य बाबूजी भी खाने के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों पर बहुत जोर देते थे।

(1) खाना हक़, हलाल व मेहनत की कमाई का हो।

(2) खाना बनाने वाला बहुत पवित्र तथा शुद्ध विचार से खाना बनायें ।

(3) खाना खाने का स्थान पवित्र हो और खाना हमेशा ईष्वर के ध्यान में खाया जाये ।

(4) शाकाहारी भोजन सतोगुणी होता है ।

(5) खाना ज्यादा स्वादिष्ट न हो ।

नोट :– हर अभ्यासी के सामने खाने के सम्बन्ध में दो ही परिस्थितियां होती हैं ।

(1) अपने घर का खाना ।

(2) बाहर का खाना ।

अपने घर का खाना :– अपने घर के खाने के समय हर अभ्यासी को चाहिये कि निम्नलिखित प्रार्थना करने के पश्चात् ही खाना खायें ।

" हे प्रभु! ये आपका दिया हुआ खाना है तू ही संसार के सभी व्यक्ति को भोजन देने वाला है। फिर ख़्याली तौर पर खाना अपने गुरूदेव को अर्पण करें और ये ख़्याल करें कि ये खाना उन्होंने प्रसाद के रूप में ग्रहण कर लिया और इसमें ईश्वर के प्रेम का प्रकाश ही प्रकाश है और संसार के सभी व्यक्तियों को भोजन मिल गया है।

इसके पश्चात् खाना ईश्वर के ध्यान में खायें"। ऐसा करने से मन निर्मल होगा और विचार शुद्ध हो जायेंगे ।

बाहर का खाना :– जब अभ्यासी को किसी दूसरी जगह का खाना, खाना पड़े तो कोशिश यही करें कि भोजन न ग्रहण करें सिर्फ़ पानी या कोई फल ले लें। यदि मजबूरी ही हो तो ये प्रार्थना करते हुये खाना खायें कि "हे प्रभु! दुनियावी रीति और रिवाज के कारण, मैं बेबस हूँ मजबूर हूँ" और खाते समय हर वक़्त ये ख़्याल करें कि मैं नहीं मेरे गुरूदेव खाना खा रहे हैं। खाना कम से कम खायें। ऐसी स्थिति में जब कहीं दूसरी जगह खाना ही पड़े तो दूसरे दिन व्रत कर लें, या बहुत हल्का खाना खायें। खाने में दूध और फल सबसे उत्तम भोजन है। कभी भी अधिक स्वादिष्ट खाना अभ्यासी को नहीं खाना चाहिये ।

साधक के जानने योग्य बातें

''निष्काम कर्म और निरंतर भजन करने से अपने गुरू तथा परमात्मा में श्रद्धा दृढ़ होगी।''

गुरूदेव के दर्शन करने से पाप टल जाते हैं ।

(क) पांच बातों से प्रेम में कमी आ जाती है।

(1) बहुत ग्रन्थ पढ़ने से

(2) अपनी हालत या स्वप्न हर जगह कहने से

(3) अधर्म की कमाई से

(4) दूसरों के अवगुण देखने से

(5) व्यर्थ भाषण या बोलने से

(6) न स्त्री माया है, न संतान, न धनदौलत। माया वह है जो हृदय को मालिक की याद से दूर कर दे ।

(ख) चार जगह सांसारिक एवं व्यावहारिक बातें नहीं करनी चाहिये ।

(1) महात्मा या सद्‌गुरू के सम्मुख ।
(2) शमशान में शव का दाह करते समय ।
(3) सत्संग या भण्डारों में ।
(4) बीमार के पास कष्ट में ।

(ग) संसार के प्रवाह से बचने के चार सेतु हैं ।

(1) संतों में श्रद्धा, गुरूदेव में अटल विश्वास ।
(2) सत्संग ।
(3) सत्य ।
(4) सहनशीलता ।

(घ) साधकों को अपनाना चाहिये ।

(1) सदा एक परमात्मा पर भरोसा रखें ।
(2) सबका हित करें ।
(3) नम्र व्यवहार रखें ।
(4) गुरूदेव के निर्देशों का अक्षरषः पालन करें।

(5) कम बोलना, कम खाना तथा कम सोने की आदत डालें ।

(6) राजी व रजा, ईश्वर पर विश्वास, यही है कि उसके कामों में राजी रहें ।

(7) सदा सत्य ही बोलें ।

(ड़) साधकों को त्यागना चाहिये ।

(1) दिखावा किसी प्रकार का न करें ।

(2) काम क्रोध लोभ मोह से यथा संभव परहेज़ करें।

(3) ऐशो आराम के लिये कर्ज़ या उधार न लें।

(4) चातुर्य, चालाकी चापलूसी से पूरा परहेज रखें।

(5) जाति पाति धर्म ऊँच नीच का भेद न करें।

जो अनजान है और अपने को जानकार मानता है उससे बचो जो अनजान है और अपनी अल्पज्ञता से परिचित है बस उसी को सिखाओ, जो जानता है पर अपने ज्ञान के बारे में शंकालु है उसे जगाओ, पर जो जानता है और साथ ही अपनी जानकारी के प्रति आस्थावान है वह बुद्धिमान है ऐसे ही व्यक्ति के पीछे चलो ।

किस माह में क्या न खायें

चेते गुड़ बैसाखे तेल
महुआ जेठ असाढ़े बेल
सावन साग न भादों मही
क्वार करेला कार्तिक मही
अगहन जीरा पूस धना
माघ में मिश्री फागुन चना

किस माह में क्या खायें

कार्तिक दूध अगहन में आलू
    पूस पान अरू माघ रतालू
फागुन शक्कर घी जो पाये
    चैत आंवला कच्चा खाये
बैसाखे जो खाय करेला
    जेठे दाख असाढ़े केला
सावन निशि में जब तब खाय
    भादौ ब्यास कबहूँ न पाय
क्वार कामना देय बचाय
    तो सत वर्ष आयु हुई जाय

पृष्ठ 83–84 का कथ्य पूज्य चाचाजी महाराज का है

ओऽम्

मनुष्य जीवन का उद्देश्य

आदमी की जिन्दगी का उद्देश्य यह है कि ईश्वर में लय हो जाये और वहां पहुॅचकर उस जगह स्थिति कर ले । यही उसका कमाल है और यही आइडियल है और आदर्श है।

समर्थ गुरू
परम संत महात्मा रामचंद्रजी महाराज,
फतेहगढ़

समाधि पर जाने के नियम

मेरे पीरो मुर्शिद ने बुजुर्गों की समाधि पर जाने का जो तरीका इस सेवक को बताया था उसे कलमबद्ध कर रहा हूँ ताकि समस्त भाइयों की जानकारी में आ जाये जिसके अनुपालन से वो बुजुर्गों की फैज़ की बारिश एवं आशीर्वाद के पात्र बन सकें ।

मैं अपना स्वयं जो करता रहा हूँ उसको उदाहरण के तौर पर लिख रहा हूँ ।

मैं हकीर नाचीज़ बंदा वी.के. सक्सेना (आप अपना नाम पढ़ें) गुलामें खास परम पूज्य डा0 श्री कृष्ण लाल भटनागर, सिकन्दराबादी (आप अपने गुरू का नाम लें जिससे आपने दीक्षा ली हो) पुत्र (पिशर) परम पूज्य डा0 श्याम लाल सक्सेना, गाजियाबादी (आप अपने सिखाने वाले का नाम पढ़ें) मेरे मुर्शिद कामील का वास्ता देते हुये आपकी खिदमत में या चरणों में अपना सलाम पेश करता हूँ । आपसे दस्तवस्ता (हाथ जोड़ कर) इस खादिम (सेवक) की यह प्रार्थना है कि

मुझ गुलाम पर अपनी फैज़ और नेमतों की बारिश करें जिसके लिये यह गुलाम ता कयामत एहसानमंद रहेगा। आपसे यह भी इल्तज़ा है कि अपनी अच्छाईयों और नेकियों को मेरे अन्दर भर दें और मेरी सब बुराइयों को हमेशा–हमेशा के लिये दूर कर दें। मुझे ऐसी हिम्मत और तौफ़ीक अता करें कि सभी सिलसिले के बुजुर्गों का और दूसरे बुजुर्गों का मेरे सर पर और मेरे सब भाइयों के सर पर आपकी रहमत का साया बना रहे और आशीर्वाद मिलता रहे ताकि सिलसिले के बुजुर्गों का नाम रोशन होता रहे।''

आमीन! आमीन! आमीन!

(2) समाधि पर बहुत अदब एवं विश्वास के साथ जायें और बराबर अपने गुरू के ख़्याल में रहें। यदि किसी को अभाग्यवश विश्वास न हो तो बेहतर है न जाये ।

(3) दरूद शरीफ का 11 बार जाप कर लें ।

(4) शजरा पढ़ें ।

(5) उनकी उपस्थिति या हुजुरी समझ कर अपने गुरू के ध्यान में बैठे ।

(6) ध्यान समाप्त होने पर अस्सलाम पढ़ें । यदि किसी मज़ार पर जोर–जोर से पढ़ने की आज्ञा न हो तो धीरे–धीरे अपने मन में पढ़ें ।

(7) ''जामे रहमत'' दुआ पढ़ कर अदब से उठें ।

दो परिस्थितियाँ होती हैं जब भी आप किसी बुजुर्ग की समाधि पर जाते हैं :–

(1) जब आप अकेले जाते हैं ।

(2) जब आप अपने सिखाने वाले के साथ जाते हैं।

जब आप अकेले जाते हैं और पूजा समाप्त कर लेते हैं तब आपको निम्नलिखित प्रार्थना करना चाहिये। उदाहरण के तौर पर जब आप परम पूज्य लालाजी महाराज की समाधि पर जायें तो प्रार्थना इस प्रकार पढ़ें, तभी अपने स्थान को छोड़ें :–

''हे! परम पूज्य लालाजी महाराज साहब आज आपने बड़ी दया करके मुझ हक़ीर बन्दे पर जो अपने रहमत एवं फैज़ की बारिश की उसके लिये मैं तहे दिल से शुक्रगुजार हूँ मुझ अपने बन्दे पर हमेशा अपना आशीर्वाद एवं प्रेम बनाये रखें। अब मुझे अपना आशीर्वाद दें ताकि यह हक़ीर बन्दा फिर अगली बार आपके चरणों में आके सलाम पेश करें ।''

आमीन! आमीन! आमीन!

नोट :— आप जिस बुजुर्ग की समाधि पर जायें, उन्हीं बुजुर्ग का नाम लें जैसे परम पूज्य चाचाजी महाराज की समाधि पर जायें तो उनका नाम लें ।

जब कोई ऐसा शख़्स जिसको इज़ाजते तालीम है और वह अपने शिष्यों के साथ समाधि पर जाता है तो यह उसका धर्म है कि समाधि छोड़ने से पहले प्रार्थना इस प्रकार करे, मिसाल के तौर पर परम पूज्य लालाजी साहब की समाधि छोड़ने से पहले उन्हें कहना चाहिये :—

''हे ! परम पूज्य लालाजी साहब आज आपने अपने फ़ैज एवं रहमत की बारिश हम सब गुनहगारों पर की है उसके लिये हम सब ता जिन्दगी शुक्रगुजार रहेगें । आप से यही प्रार्थना है कि हम सब पर हमेशा अपना प्रेम और आशीर्वाद बनायें रखें। मुझ नाचीज़ बन्दे को ऐसा आशीर्वाद दें कि अगली मर्तबे (बार) मैं और यह सब बन्दे और नये बन्दे आकर आपके चरणों में सलाम पेश करें, जिसके लिये मैं आपकी रहमत का तलबगार हूँ।''

आमीन! आमीन! आमीन!

निर्देश

पूज्य बाबूजी ने पत्र में एक इच्छा जाहिर की थी कि पूज्यलालाजी महाराज के घर में किसी शादी के मौके पर तीन भजन गाये गये थे, उन्होंने आदेश दिया था कि किताब में वो भजन डाल देना । किन्हीं कारणवश पूजा की विधि के प्रथम संस्करण में यह न लिखा जा सका । ईश्वर की दया से पुस्तक का चतुर्थ संस्करण छपने जा रहा है। उसमें यह तीनों भजन लिखकर मैं श्रद्धेय पूज्य बाबूजी के आदेशों का पालन करना अपना कर्तव्य समझता हूँ ।

भजन तो सब अच्छे हैं जिनमें भाव हो परन्तु पूज्य बाबूजी को यह भजन इसलिए पसन्द थे क्योंकि यह पूज्यलालाजी के यहां गाये गये थे । यह उनकी उत्कट गुरू भक्ति का प्रमाण है जिसकी तड़प प्रेम करने वाले ही समझ सकते हैं। परमात्मा उनके प्रेमियों को भी ऐसा ही प्रेम बख्शे यही दुआ है।

भजन

(1)

उठ जाग मुसाफिर भोर भई
　　अब रैन कहां जो सोवत है ।
जो सोवत है, सो खोवत है ।
　　जो जागत है सो पावत है ।
उठ नींद में अँखियां खोल जरा
　　ओ ग़फिल रब से ध्यान लगा ।
यह प्रीति करन की रीति नहीं,
　　रब ज़ागत है तू सोवत है ।
ऐ जान भुगत करनी अपनी,
　　ओ पापी पाप में चैन कहां ।
जब पाप की गठरी शीश धरी,
　　फिर शीश पकड़ क्यों रोवत है ।
जो काल करे सो आज कर ले ।
　　जो आज करे सो अब कर ले ।
जब चिड़ियन खेती चुग डाली
　　फिर पछताए क्या होवत है ।
उठ जाग मुसाफिर ....

(2)

बहुत ढूंढा न पाया आसमान में जमीनों में
वह निकले मेरे जुलमत खानाए दिल के मकीनों में
मैं तारीकी हूँ लेकिन मुझमें पोशीदा वह गौहर है
अयां जिसकी झलक है एक फलक तेरे नगीनों में
तमन्ना दर्दे दिल की हो तो कर खिदमत फकीरों की
नहीं मिलता यह गौहर बादशाहों के खजानों में
मोहब्बत के लिए दिल ढूंढ कोई टूटने वाला
यह वह मय है जिसे रखते हैं नाजुक आवगीनों में
न ढूँढ इस खिर्का पोशी में इरादत हो तो देख उनको
पदे बैज़ा लिए बैठे जो अपनी आस्तीनों में
खामोश ऐ दिल भरी महफिल में चिल्लाना नहीं अच्छा
अदब पहला करीना है मोहब्बत के करीनों में ।

(3)

मोह सोवत श्याम जगाय गयो
सपने में दरश दिखाय गयो ।
मुख मोड़–मोड़ मुसकाय गयो
कछु नयन से सैन चलाय गयो ।

छवि देखि पिया की मैं दंग रही
सखि मन ही मन में उमंग रही ।
न उमंग रही न तरंग रही
वह तो रोम–रोम रंग छाय रह्‌यो ।।

दई मारि गई मोरि नींद उचटि
फिर पाय पिया को न अपने निकट
घबराके लगी देखन इत उत ।
कित जाने वह राम बिलाय गयो ।

अब आवत नींद न जात जिया
सखि कैसे मिले देखन को पिया ।
चलो डूब मरें गहरी निंदिया
यही राह मिलन की बताय गयो ।

यूं रोये से कुछ होत कहां
मिट जाय दुइ तो मिटे झगड़ा
उसे ढूँढत है तू इत उत क्या ।
वह तोही मे तो समाय गयो ।

गुरू पूर्णिमा के महत्व का गीत

गुरू पूर्णिमा का दिन ये बड़ा बेमिसाल है ।
प्राचीन प्रथा का पर्व ये बड़ा ही विशाल है ।।

जो आज उस प्रथा को किये जा रहे हैं हम ।
शाक़ी के इशारे से पिये जा रहे हैं हम ।।
इस पर्व की प्रथा का यही तो कमाल है ।।
गुरू पूर्णिमा ....
ऐसी कृपा करें कि क़ायम रहे सरूर ।
गफ़लत में ढल न जाए कहीं जिन्दगी का नूर ।।
बेचैन मुरीदों का यही तो सवाल है।।
गुरू पूर्णिमा ....
इस दिल के अन्धेरे की वजह कुछ न पूछिये ।
रौशन होवें चिराग करम कुछ तो कीजिये ।।
तेरे सामने भी होके हमारा ये हाल है ।।
गुरू पूर्णिमा ....

हर सिलसिले की बरकतें तेरे दर पर बरसती हैं ।
जन्नत से नियामतें भी आने को तरसती हैं ।
रूतबा हमारे पीर का कितना विशाल है ।।
गुरू पूर्णिमा ....

हम तेरा शुक्रिया सनम कैसे अदा करें ।
यारब गुनाह माफ करे ये इल्तजा करें ।
गर अपने मुरीदों का तुझे कुछ भी ख़्याल है ।।
गुरू पूर्णिमा ....

यह नक़्शबन्दियों के सिलसिले का हवाल है ।
हर सिलसिले के लोग भी होते निहाल हैं ।
मेरे सिलसिले के पीर को हासिल कमाल है ।।
गुरू पूर्णिमा ....

ओउम्

गुरूदेव से विनती

जगत रूठे जाये प्रभु तुम न रूठो,
तुम्ही हो मेरी जिन्दगी का सहारा ।
तुम्ही ने अगर दीप की लौ बुझा दी,
तो चमकेगा कैसे यह जीवन सितारा ।।
चली आज भव सिन्धु को पार करने,
यह नौका तुम्हारा ही लेकर सहारा ।
तुम्ही रूठ बैठे अगर मेरे नाविक,
तो डूबेगी तरनी न पाकर किनारा ।।
बड़ी ही कठिनता से पकड़ा है प्रभु जी,
मुहब्बत के हाथों ने दामन तुम्हारा ।
छुड़ाओं इसे मत निबल जान मुझको
तुम्हारा नहीं अब ये दामन हमारा ।।
तुम्हीं ज्योति बन कर बसे हो नयन में,
तुम्हीं ने दिखाया मुझे पथ सारा ।
तुम्हारे सिवा इस अंधेरी डगर में,
मुझे कौन आकर के देगा सहारा ।

जगत को उठाने की मैं सोचता था,
तुम्हारी भुजाओं का लेकर सहारा ।
मगर जब तुम्हीं हाथ ढीले किये हो,
जगत क्यों उठायेगा बोझा हमारा
हृदय का सरोवर तो सूना रहेगा,
अरूण की किरण का न पाकर सहारा
सवेरा न होगा न पंकज खिलेगें,
कृपा दृष्टि से यदि न तुमने निहारा ।

भजन

कागा सब तन खाइयों
    चुन–चुन खा लेहु माँस
दुई नयनन के छाड़ि देऊ
    जिन गुरू दरश की आस
कागा नयननि काढ़ि के
    ले जाओ सदगुरू पास
नयनन दरश दिखाई के
    पाछे खा लेऊ माँस
इतना तो करना गुरूवर
    जब प्राण तन से निकले
तेरा नाम मुख से निकले
    तब प्राण तन से निकले
कोई आस न हो मन में
    कोई त्रास ना हो तन में
गुरू देव की दया हो
    तब प्राण तन से निकले

रघुबर राम की रटन हो
  श्री कृष्ण का मनन हो
श्री श्याम सामने हो
  बस प्राण तन से निकले
सब धर्म कर्म बिसरे
  सब जग बिसर ही जाये
बस तू ही तू हो बाकी
  तब प्राण तन से निकले
छोटी सी आरजू है
  पूरी जरूर करना
बस तेरे ही चरण हो
  तब प्राण तन से निकले
गुरू देव सामने हो
  बस प्राण तन से निकले
इतना तो करना गुरूवर

भजन

राम नाम के हीरे मोती, मैं बिखराऊँ गली–गली
ले लो रे कोई राम का प्यारा शोर मचाऊँ गलीगली
भोगों के मतवालों सुनलो एक दिन ऐसा आयेगा
धन दौलत और माल खजाना पड़ा यही रह जायेगा
कंचन काया मिट्‌टी होगी, चर्चा होगी गलीगली
जिन को तू माने सगा संबंधी एक दिन तुझे भुलायेंगे
उस वक्त तुम्हारे गुरूवर, मारग तुझको दिखलायेगें ।
जगत मुसाफिर खाना है, एक दिन होगी चला चली
ऐसा फिर आजाद समय तू कभी न बन्दे पायेगा
सयम निकल जायेगा बन्दे, हाथ कुछ न आयेगा
सरधुन पछतायेगा बस आसू होगें ढलाढली
श्याम' गुरू हो प्रगट हुये दसों दिशा उजियारा है
आकर देखो संत शरण तुम खुला हुआ गुरूदारा है
गुरू चरणों का एक सहारा लख चौरासी टलाटली ।

नोट :– यह भजन परमपूज्य बाबूजी, पूज्य भाईसाहब तथा सेवक एवं कई अन्य भाई जब पूज्य ब्रजमोहनलाल साहब की समाधि पर गये थे, गाया गया था और एक समा बंध गया था ।

भजन

राम रघुबर कृष्ण श्याम गाते चलो
मन के विषयों को विष से हटाते चलो
देखना इन्द्रियों के न घोड़े भगे
        इनको संयम के दिन रात कोड़े लगे
अपने रथ को सुमार्ग पर चलाते चलो ।
काम करते रहो नाम जपते रहो
'श्याम' प्यारे का तुम ध्यान धरते रहो
        पाप की वासनायें मिटाते चलो !
याद आयेगी उनको कभी न कभी
दर्शन देंगे वो आके कभी न कभी
यह विश्वास मन में जमाते चलो ।
        दुःख में तड़पो नहीं सुख में भूलो नहीं
नाम धन का खजाना बढ़ाते चलो !
नाम जप–जप के भगतों ने पाई गति
दास सारे उन्हीं से करें विनती
'श्याम' प्यारे को मन में रिझाते चलो ।

भण्डारे का विदाई भजन

हो मुबारक उन्हें आज का दिन
जो कि भण्डारे आये हुए हैं ।
आज द्वारे गुरूजी के आके
सर को अपने झुकाए हुए हैं
फैज़से अपने फ़ैज़याब कर दे
नूर से अपने कर दें वे रौशन
हम दुआ के लिए हाथ अपना
उनके आगे उठाए हुए हैं
शर्म से सर झुकाए हुए हैं
फिर भी हम उनके ही रूबरू हैं
माफ़ कर दें खताएं हमारी
हम गुनाहगार आये हुए हैं
सबकी झोली को भर देने वाले
मेरी झोली पे भी एक नजर कर
जायेंगे ना तेरे दर से ख़ाली

हम भी झोली फैलाए हुए हैं
मेरी खुशियों का आलम न पूछो,
हो न जाऊँ कहीं मैं ही पागल
मेरे आक़ा मेरे नाथ मुझपे
आप ही आप छाए हुए हैं ।

रामचरित मानस की हृदयस्पर्शी चौपाईयाँ

रामहि केवल प्रेमु पिआरा ।
जानि लेउ जो जाननिहारा ।।
सोई जानहीं जिन देहू जनाई ।
जानत तुम्हहिं तुम्हहिं होइ जाई ।।
उमा दारू जोशित की नाईं ।
सबहि नचावत रामु गोसाईं ।।
जेहि बिधि नाथ होई हित मोरा ।
करहु सो बेगि दास मैं तोरा ।।
मोरें तुम्ह प्रभु गुर पितु माता ।
जाउँ कहाँ तजि पद जलजाता ।।
प्रभु की कृपा भयऊ सब काजू ।
अब तब चरण रहहूँ अनुरागु ।।
अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें ।
दीनदयाल अनुग्रह तोरें ।।

अब प्रभु कृपा करहु ऐहि भाँती ।
सब तजि भजनु करौं दिन राती ।।
कोमल चित अति दीनदयाला ।
कारन बिनु रघुनाथ कृपाला ।।

साधना में व्यक्तिगत उन्नति के चिन्ह

परम पिता परमात्मा के अनेकों गुण हैं जो मनुष्य की बुद्धि के परे हैं। फिर भी संतों ने संसार की भलाई के लिए उनके प्रमुख –प्रमुख गुणों का गान भांति–भांति से किया है। वे ईष्वरी मुख्य छः गुण इस प्रकार हैं :–

(1) दया
(2) दान
(3) दीनता
(4) क्षमा
(5) सच्चाई
(6) प्रेम

इसी के आधार पर ईश्वर के नाम रखे गये हैं। जैसे– दीनानाथ, दयानिधान, सच्चिदानन्द आदि ।

इसी प्रकार मनुष्य के अनेकों अवगुण हैं । जिनमें मुख्य छः प्रकार हैं :– काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, अहंकार। जब परमार्थी सच्चे रास्ते पर चलता है तो उसके ये मुख्य अवगुण समाप्त होने लगते हैं और

उनकी जगह सन्तों के या ईश्वरी गुण आने लगते हैं । मनुष्य इसी आधार पर अपने अभ्यास में अपनी उन्नति की परख कर सकता है। यदि यह गुण उसके व्यवहार में आ रहे है तो अभ्यास ठीक है। यदि नहीं आ रहे हैं तो कहीं कोई कमी है।

वंश परिचय

रामाश्रम सत्संग

अधिष्ठाता— परम् संत श्री रामचन्द्र जी सहाय (परम् पूज्य लाला जी महाराज), फतेहगढ़

रामाश्रम सत्संग के अधिष्ठाता परम् पूज्य लाला जी महाराज (परम संत श्री रामचन्द्र जी सहाय) एवं उनके प्रिय अनुज महात्मा रघुबर दयाल जी महाराज उर्फ पूज्य चच्चा जी महाराज के रूहानी एवं जिस्मानी वंशजों की स्मरणीय तिथियाँ एवं पावन विवरण

1. परम् संत श्री रामचन्द्र जी सहाय
(पूज्य लाला जी महाराज)

जन्म तिथि	2.2.1873, रविवार, बसंतपंचमी
जन्म स्थान	फररूखाबाद
निर्वाण तिथि	14.8.1931, शुक्रवार
निर्वाण स्थान	फतेहगढ़
श्राद्ध तिथि	द्वितीया
समाधि स्थल	फतेहगढ़, (नवदिया)

2. परम् संत श्री रघुवर दयाल जी
(पूज्य चाचा जी महाराज)

जन्म तिथि	7.10.1875, शुक्रवार
जन्म स्थान	फरूर्खाबाद
निर्वाण तिथि	7.6.1947, शनिवार
निर्वाण स्थान	कानपुर
श्राद्ध तिथि	चतुर्थी
समाधि स्थल	कानपुर, हमीरपुर रोड

3. परम् संत श्री ब्रज मोहन लाल जी महाराज

जन्म तिथि	14.4.1898, गुरूवार, रामनवमी
जन्म स्थान	फतेहगढ़
निर्वाण तिथि	17.1.1955, सोमवार
निर्वाण स्थान	मुम्बई
श्राद्ध तिथि	दशमी
समाधि स्थल	तिलकनगर, लखनऊ

4. परम् संत श्रीकृष्ण स्वरूप जी

जन्म तिथि	22.12.1879
जन्म स्थान	भोगाँव
निर्वाण तिथि	19.9.1958
निर्वाण स्थान	जयपुर
श्राद्ध तिथि	
समाधि स्थल	फतेहगढ़, (नवदिया)

5. परम् संत श्री जगमोहन नारायण जी

जन्म तिथि	2.11.1900 शनिवार
जन्म स्थान	फतेहगढ़
निर्वाण तिथि	28.8.1944, सोमवार
निर्वाण स्थान	फतेहगढ़
श्राद्ध तिथि	त्रयोदशी
समाधि स्थल	फतेहगढ़, (नवदिया)

6. परम् संत श्री डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी भटनागर
(पूज्य ताऊ जी महाराज)

जन्म तिथि	15.10.1894 सोमवार, नवमी
जन्म स्थान	माउंट गुमरी, करनाल
निर्वाण तिथि	18.5.1970, सोमवार
निर्वाण स्थान	सिकन्दराबाद, उ0 प्र0
श्राद्ध तिथि	त्रयोदशी
समाधि स्थल	सिकन्दराबाद, उ0 प्र0
स्मारक	लखनऊ

7. परम् संत श्री डॉ. श्याम लाल सक्सेना
(पूज्य बाबूजी महाराज)

जन्म तिथि	1.1.1901 मंगलवार
जन्म स्थान	कटिया, बदायूँ
निर्वाण तिथि	29.12.1987, मंगलवार
निर्वाण स्थान	गाजियाबाद
श्राद्ध तिथि	एकादशी
समाधि स्थल	गाजियाबाद
स्मारक	लखनऊ

8. परम् संत श्री श्याम बिहारी लाल जी
(पूज्य पोस्ट मास्टर साहब)

जन्म तिथि	19.7.1890, शनिवार
जन्म स्थान	कायमगंज, फरूर्खाबाद
निर्वाण तिथि	6.7.1959, सोमवार
निर्वाण स्थान	फतेहगढ़
श्राद्ध तिथि	अमावस्या
समाधि स्थल	फतेहगढ़

9. परम् संत श्री डा. चतुर्भज सहाय जी

जन्म तिथि	3.11.1883, शनिवार
जन्म स्थान	चमकारी, एटा
निर्वाण तिथि	23.9.1957, सोमवार
निर्वाण स्थान	मथुरा
श्राद्ध तिथि	अमावस्या
समाधि स्थल	मथुरा

10. परम् संत श्री प्रभु दयाल जी (पूज्य पेशकार साहब)

जन्म तिथि	1885, गुरूवार
जन्म स्थान	
निर्वाण तिथि	9.1.1948, शुक्रवार
निर्वाण स्थान	कानपुर
श्राद्ध तिथि	तेरस
समाधि स्थल	

11. परम् पूज्य श्री राम चन्द्र जी (पूज्य बाबूजी)

जन्म तिथि	30.4.1899 रविवार
जन्म स्थान	
निर्वाण तिथि	19.4.1983, मंगलवार
निर्वाण स्थान	शाहजहांपुर
श्राद्ध तिथि	सप्तमी
समाधि स्थल	शाहजहांपुर

12. परम् संत श्री सेवती प्रसाद मुख्तार जी

(पूज्य फूफा जी साहब)

जन्म तिथि	1.12.1899 शुक्रवार
जन्म स्थान	सहावर, एटा
निर्वाण तिथि	30.8.1989, बुधवार
निर्वाण स्थान	रेवाड़ी हरियाणा
श्राद्ध तिथि	परवा

13. परम् पूज्य श्री राधा मोहन लाल जी

(पूज्य श्री मुंशी बाबू)

जन्म तिथि	अक्टूबर 1900, फतेहगढ़
जन्म स्थान	फतेहगढ़
निर्वाण तिथि	21.7.1966, शनिवार
निर्वाण स्थान	कानपुर
श्राद्ध तिथि	परवा
समाधि स्थल	कानपुर (हमीरपुर रोड)

14. परम् पूज्य श्री ज्योतिन्द्र मोहन लाल जी

(पूज्य ज्योति बाबू)

जन्म तिथि	17.6.1913 शुक्रवार
जन्म स्थान	
निर्वाण तिथि	11.7.1989, शनिवार
निर्वाण स्थान	कानपुर
श्राद्ध तिथि	एकादशी
समाधि स्थल	कानपुर (हमीरपुर रोड)

15. परम् पूज्य श्री हीरा लाल जोशी जी

जन्म तिथि	22.11.1899 बुधवार
जन्म स्थान	रेवाड़ी
निर्वाण तिथि	11.9.1979, बुधवार
निर्वाण स्थान	रतलाम
श्राद्ध तिथि	षष्ठी
समाधि स्थल	

16. परम् पूज्य श्री भवानी शंकर जी

(पूज्य चाचा जी उरई वाले)

जन्म तिथि	6.11.1891 शुक्रवार
जन्म स्थान	
निर्वाण तिथि	20.7.1973, शुक्रवार
निर्वाण स्थान	उरई
श्राद्ध तिथि	पंचमी
समाधि स्थल	उरई, कोंच रोड

17. परम् पूज्य श्री ठाकुर रामसिंह जी

जन्म तिथि	3.9.1899 रविवार
जन्म स्थान	
निर्वाण तिथि	14.1.1971, गुरूवार
निर्वाण स्थान	
श्राद्ध तिथि	तृतीया
समाधि स्थल	ग्रा0 मनोहरपुरिया, संगनेर, जयपुर

18. परम् पूज्य श्री हर नारायण सक्सेना

जन्म तिथि	20.3.1908
जन्म स्थान	पिरवा राजस्थान
निर्वाण तिथि	4.3.2003, मंगलवार
निर्वाण स्थान	जयपुर
श्राद्ध तिथि	
समाधि स्थल	

19. परम् पूज्य श्री हरीकृष्ण भटनागर

जन्म तिथि	6.8.1923
जन्म स्थान	सिकन्द्राबाद, बुलन्दशहर
निर्वाण तिथि	10.3.1987
श्राद्ध तिथि	
समाधि स्थल	सिकन्द्राबाद, उ0प्र0

20. परम् पूज्य डा. आर. के. सक्सेना
(पूज्य सेठ भाई साहब)

जन्म तिथि	3.7.1931 शुक्रवार
जन्म स्थान	बुलंदशहर, उ0प्र0
निर्वाण तिथि	9.2.2002
निर्वाण स्थान	गाजियाबाद
श्राद्ध तिथि	त्रयोदषी
समाधि स्थल	गाजियाबाद
स्थल स्मारक	लखनऊ

नोट :– यद्यपि इस विषय वस्तु का पैम्पलेट पहले ही प्रेमियों को दिया जा चुका है परन्तु भाइयों की सुविधा हेतु इसे इस नित्य प्रयोग में आने वाली पुस्तक में लिख रहा हूँ । यद्यपि तिथियों स्थान आदि में हर प्रकार की सावधानी रखी गयी है, फिर भी यदि कोई संषोधन करने जैसा तथ्य किसी भाई की जानकारी में आये तो कृपया सूचित अवष्य करने की कृपा करें जिससे उचित संषोधन कर दिया जाये ।